कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 1 मई 2023 वर्ष-21 अंक - 34 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ -1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िए

5

पेस्टिसाइड डीलर, वितरकों व निर्माताओं के कर्तव्य...

6

मिर्च को कीट-रोग से बचायें

श्री बघेल को फ्रांस की यूनिवर्सिटी ने डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा

फ्रांस के कार्यक्रम 'ग्लोबल अवॉर्ड्स 2023' में शामिल हुए मुख्यमंत्री

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल को विश्वप्रसिद्ध सोरबोन यूनिवर्सिटी द्वारा छत्तीसगढ़ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सीमित एवं स्थानीय संसाधनों की उपयोगिता के साथ आगे बढ़ाने की विशिष्ट पहल के लिए डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया। मुख्यमंत्री श्री बघेल श्री अरोबिंदो फाउंडेशन द्वारा राजधानी रायपुर स्थित होटल सायाजी में आयोजित सोरबोन यूनिवर्सिटी ऑफ पेरिस, फ्रांस के कार्यक्रम 'ग्लोबल अवॉर्ड्स 2023' में शामिल हुए। इस अवसर पर इसरो के पूर्व वैज्ञानिक श्री सुरेश कुमार, सोरबोन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डॉ. विवेक, श्री अरोबिंदो योग एवं नॉलेज फाउंडेशन के डायरेक्टर डॉ. समरेन्द्र घोष, डॉ. बी.के. स्थापक, डॉ. संदीप मारवाह, डॉ. विनय अग्रवाल भी उपस्थित रहे। श्री भूपेश बघेल की धर्मपत्नी श्रीमती मुक्तेश्वरी बघेल एवं उनके परिवार के लोग भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि फ्रांस की प्रतिष्ठित सोरबोन यूनिर्विसिटी ने छत्तीसगढ़ शासन के विकास कार्यक्रमों को सराहा है और मुझे आज डॉक्टरेट की मानद उपाधि से नवाजा है, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। जब काम करना शुरू किया तो बस ये चाह थी कि अच्छा काम करते रहना है। काम करते गए और रास्ता निकलता गया। ये उपाधि जरूर मुझे मिली है लेकिन इसके पीछे योगदान मेरे परिवार वालों का है। जनप्रतिनिधियों का है अधिकारी-कर्मचारियों का है। यह सम्मान छत्तीसगढ़ के सभी मेहनतकश लोगों का सम्मान है जिन्होंने अपने श्रम से छत्तीसगढ़ को खड़ा किया।

भेंट-मुलाकात

जरहागांव को मिलेगा नगर पंचायत का दर्जा

- मुंगेली विधानसभा के ग्राम जरहागांव में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने की घोषणा
- मुख्यमंत्री ने 33 करोड़ 12 लाख रूपए के 18 कार्यों का किया लोकार्पण एवं भूमिपूजन

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने अपने प्रदेशव्यापी भेंट-मुलाकात कार्यक्रम के तहत मुंगेली जिले के ग्राम जरहागांव में आमजनों से संवाद किया। उन्होंने इस दौरान जरहागांव को नगर पंचायत का दर्जा और मुंगेली विधानसभा के ग्राम जरहागांव में नया कॉलेज खोलने सहित अनेक महत्वपूर्ण घोषणाएं भी की।

इस मौके पर मुख्यमंत्री ने 33 करोड़ 12 लाख रूपए के 18 विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया। इसमें 31 करोड़ 35 लाख रूपए के शिलान्यास कार्य तथा एक करोड़ 67 लाख रूपए के लोकार्पण कार्य शामिल हैं। कार्यक्रम में संसदीय सचिव श्रीमती रश्मि आशीष सिंह, विधायक श्री पुन्नूलाल मोहले, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती लेखनी चंद्राकर सहित अनेक जनप्रतिनिधि शामिल हुए।

मुख्यमंत्री की घोषणाएं

मुख्यमंत्री ने जरहागांव में नया कॉलेज खोलने, जरहागांव को नगर पंचायत का दर्जा देने, जिला अस्पताल में सिटी स्कैन की व्यवस्था करने, नगर पालिका मुंगेली में नए कार्यालय भवन के निर्माण, मुंगेली में नया स्विमिंग पूल निर्माण हेतु 50 लाख, जरहागांव स्कूल का उन्नयन स्वामी आत्मानन्द स्कूल में, ग्राम अमोरा में जिला सहकारी बैंक की शाखा खोला, मुंगेली बाईपास में प्रकाश की व्यवस्था हेतु डेढ़ करोड़ देने, जरहागांव पीएचसी के सीएचसी में उन्नयन, ग्राम पंचायत रामगढ़ में जिला अस्पताल पहुंच मार्ग का निर्माण, सर्किट जरहागांव हेतु पहुंच मार्ग का निर्माण, ग्राम सेतगंगा से ग्राम कोसमतरा तक सड़क मरम्मत एवं संधारण कार्य की घोषणा की।

श्री अन्न का उत्पादन व खपत बढ़ाने पर जोर : श्री तोमर

दिल्ली हाट में मिलेट्स एक्सपीरियंस सेंटर का केंद्रीय कृषि मंत्री ने उद्घाटन किया

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने गत दिनों दिल्ली हाट, आईएनए में कृषि मंत्रालय और नेफेड द्वारा स्थापित मिलेट्स (श्री अन्न) एक्सपीरियंस सेंटर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री तोमर ने कहा कि भारत सरकार का जोर राज्य सरकारों सहित सभी संबंधित संस्थानों के सहयोग से देश में श्री अन्न का उत्पादन, उत्पादकता, प्रसंस्करण और खपत बढ़ाने पर है।

अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स (श्री अन्न) वर्ष 2023 के तहत यह केंद्र खोला गया है। श्री तोमर ने कहा कि देश के छोटे किसानों के लिए इसकी खेती बहुत फायदेमंद है, जो वर्षा आधारित है। कम जमीन व कम उपजाऊ मिट्टी एवं कम पानी में श्री अन्न की खेती की जा सकती है। हमारे विविध जलवायु वाले देश में यह काफी महत्वपूर्ण है। श्री तोमर ने दिल्ली हाट में मिलेट्स एक्सपीरियंस सेंटर की स्थापना पर प्रसन्नता जताते हुए कहा कि श्री अन्न के किसानों, उद्यमियों, मूल्य-श्रृंखला में शामिल लोगों के लिए यह महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

केंद्रीय कृषि सचिव श्री मनोज आहूजा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। नेफेड के प्रबंध निदेशक श्री राजबीर सिंह ने स्वागत भाषण देते हुए बताया कि इस केंद्र पर घरेलू स्टार्टअप द्वारा तैयार श्री अन्न के उत्पाद भी उपलब्ध रहेंगे। कार्यक्रम के दौरान, श्री अन्न के क्षेत्र में काम कर रही संस्थाओं को श्री तोमर ने सम्मानित किया एवं मिलेट एक्सपीरियंस बुकलेट का विमोचन किया। केंद्रीय कृषि मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती शुभा ठाकुर ने आभार माना।

डेयरी उद्योग प्रबंधन में नारी-शक्ति की अहम भूमिका : श्रीमती मुर्मु

नई दिल्ली। राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के शताब्दी वर्ष में 19वां दीक्षांत समारोह राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु के मुख्य आतिथ्य में हुआ। हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय, मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर, केंद्रीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री परषोत्तम रूपाला, केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री कैलाश चौधरी, आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक विशेष अतिथि थे। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु ने कहा कि भारत में डेयरी उद्योग के प्रबंधन में नारी-शक्ति अहम भूमिका निभा रही हैं। डेयरी सेक्टर में 70 प्रतिशत से अधिक भागीदारी महिलाओं की है। बहुत खुशी की बात है कि आज डिग्री प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में एक-तिहाई से अधिक लड़कियां हैं, स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में भी 50 प्रतिशत लड़कियां हैं।

श्री तोमर ने कहा कि एनडीआरआई देश का बहुत ही महत्वपूर्ण संस्थान है, जिसने 100 वर्ष की गौरवशाली यात्रा पूर्ण की है। देशभर में कृषि विश्वविद्यालयों में प्रतिस्पर्धा में आईसीएआर से सम्बद्ध एनडीआरआई ने लगातार 5 वर्षों तक प्रथम स्थान प्राप्त किया, जो गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि देश में वर्ष 2021-22 में दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता 444 ग्राम प्रतिदिन रही, जबकि 2021 के दौरान वैश्विक औसत 394 ग्राम प्रतिदिन था। देश में 2013-14 से 2021-22 के बीच दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता में लगभग 44त्न की वृद्धि हुई है।

हरियाणा के राज्यपाल श्री दत्तात्रेय, मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल, केंद्रीय मंत्री श्री रूपाला ने भी संबोधित किया। समारोह में स्नातक-स्नातकोत्तर, पी.एचडी. डिग्री प्रदान की गई। श्रेष्ठ विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक दिए गए। यहां संस्थान के निदेशक व कुलपति डॉ. धीर सिंह सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

छोटे किसानों को मिलें टेक्नालॉजी का लाभ : श्री तोमर

केंद्रीय कृषि मंत्री ने किया फार्म मशीनरी टेक्नालॉजी समिट का शुभारंभ

नई दिल्ली। सीआईआई व ट्रैक्टर एंड मैकेनाइजेशन एसोसिएशन (टीएमए) द्वारा फार्म मशीनरी टेक्नालॉजी पर आयोजित शिखर सम्मेलन का शुभारंभ केंद्रीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने किया। यहां श्री तोमर ने कहा कि देश में लगभग 85 प्रतिशत छोटे किसान हैं, जिन्हें टेक्नालॉजी-मशीनरी का लाभ मिलना चाहिए।

कृषि यंत्रीकरण उप-मिशन (एसएमएएम) के तहत प्रशिक्षण, परीक्षण, सीएचसी, हाई-टेक हब, फार्म मशीनरी बैंकों (एफएमबी) जैसी विभिन्न गतिविधियों के लिए वर्ष 2014-15 से 2022-23 तक राज्यों को 6120.85 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई है, वहीं राज्य सरकारों के माध्यम से ट्रैक्टर, पावर टिलर और स्वचालित मशीनरी सहित सब्सिडी पर 15.24 लाख कृषि मशीनरी और उपकरण वितरित किए गए हैं।

श्री तोमर ने कहा कि भारत सरकार द्वारा 'केंद्रीय कृषि मशीनरी प्रशिक्षण और परीक्षण संस्था' (सीएफएमटीटीआई), बुदनी (म.प्र.) में ट्रैक्टरों के परीक्षण की नई व्यवस्था लागू कर परीक्षण को पूरा करने की अधिकतम समय-सीमा को घटाकर अधिकतम 75 कार्य दिवस कर दिया गया है। साथ ही, वर्ष 2014-15 से 2022-23 तक केंद्र सरकार दवारा अपने चार एफएमटीटीआई व चिन्हित नामित अधिकृत परीक्षण केंद्रों के माध्यम से 1.64 लाख प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया गया हैं। कार्यक्रम में सीआईआई व टीएमए के श्री भारतेंदु कपूर, श्री मुकुल वार्ष्णेय, जॉन डेर, श्री कृष्णकांत तिवारी, श्री एंटनी चेरूकारा सहित अन्य पदाधिकारी व सदस्यगण मौजूद थे।

केंद्रशासित राज्यों में भी योजनाओं का शत-प्रतिशत क्रियान्वयन करें : श्री तोमर

नई दिल्ली। केंद्रशासित प्रदेशों में कृषि क्षेत्र के समग्र विकास के उद्देश्य से केंद्रीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर की अध्यक्षता में इन प्रदेशों की बैठक हुई। इसमें श्री तोमर ने कहा कि केंद्रशासित प्रदेशों में भी योजनाओं का शत-प्रतिशत क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाना चाहिए, वहां के सभी किसानों को भी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिलना चाहिए। प्रतिकूलता में अनुकूलता तलाशकर काम करना चाहिए।

श्री तोमर ने कहा कि केंद्रशासित प्रदेशों का समुचित विकास भारत सरकार का लक्ष्य है। श्री तोमर ने कहा कि केंद्रशासित प्रदेश व केंद्र सरकार एक-दूसरे के पूरक हैं। इन प्रदेशों में भी परस्पर संवाद व अनुकूलता के साथ कठिनाइयां हल करते हुए विकास का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारा कृषि क्षेत्र बहुत महत्वपूर्ण व व्यापक है, छोटे किसानों की संख्या भी अत्यधिक है लेकिन काम करने की पर्याप्त अनुकूलता भी है। केंद्र सरकार के पास योजनाओं व फंड्स की कमी नहीं है, जरूरत है योजनाओं के पूर्ण क्रियान्वयन की। बैठक में कृषि सचिव श्री मनोज आहूजा सहित संघ राज्य क्षेत्रों के अधिकारियों ने भी विचार रखे। बैठक में कृषि और अन्य केंद्रीय मंत्रालयों एवं संबंधित केंद्रीय-राज्य संस्थानों के अधिकारी उपस्थित थे।

सरकार ने 27 पेस्टिसाइड में से 3 पर लगाया प्रतिबंध, किसानों को मिली राहत

नई दिल्ली। 27 पेस्टिसाइड में से 3 पर प्रतिबंध लगाने के कृषि मंत्रालय के फैसले से किसानों और कृषि रसायन उद्योग दोनों को बड़ी राहत मिली है। प्रतिबंधित तीन पेस्टिसाइड डाइकोफोल, डीनोकैप और मेथोमाइलपर हैं क्योंकि इन पेस्टिसाइड के उपयोग से सुरक्षा और इनकी प्रभावकारिता का डेटा उपलब्ध नहीं हैं जिसके कारण मानव और जानवरों के लिए स्वास्थ्य संबंधी खतरे और जोखिम हो सकता हैं। इन पेस्टिसाइड के बेहतर विकल्प उपलब्ध हैं।

केंद्र सरकार ने 2 फरवरी 2023 को इन तीन पेस्टिसाइड के पंजीकरण, आयात, निर्माण, परिवहन, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक अधिसूचना जारी की थी।

तीनों पर प्रतिबंध लगाने के अलावा, केंद्र सरकार ने विशेषज्ञ समिति की सिफारिश पर कुछ चुनिंदा फसलों को लेबल के दावे (label claim) से हटाने का फैसला किया, जिनके लिए जैव-प्रभावकारिता और अवशेष डेटा उपलब्ध नहीं था। जिन 8 पेस्टिसाइड के लेबल क्लेम में बदलाव किया गया है, वे कार्बोफ्यूरान, मैलाथियान, मोनोक्रोटोफॉस, क्विनालफॉस, मैनकोजेब, ऑक्सीफ्लोरफेन, डायमेथोएट और क्लोरोपायरीफॉस हैं।

प्रतिबंध का निर्णय खरीफ सीजन की शुरुआत से ठीक पहले और समय पर किया गया है। खरीफ या मानसून का मौसम भारतीय किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण समय हैं और शेष 24 में से कुछ प्रमुख पेस्टिसाइड की कम कीमत पर उपलब्धता किसानों के लिए खेती की लागत को कम रखने में मदद करेगी।

27 पेस्टिसाइड की पूरी सूची में **कीटनाशक:** एसीफेट, बेनफ्यूराकार्ब, कार्बोफ्यूरान, क्लोरोपायरीफॉस, डेल्टामेथ्रिन, डाइकोफोल, डाइमेथोएट, मैलाथियान, मेथोमाइल, मोनोक्रोटोफॉस, थायोडिकार्ब और क्विनालफॉस; **शाकनाशी:** एट्राजीन 2,4-डी, डाययूरोन, बुटाक्लोर, ऑक्सीफ़्लोरफ़ेन, पेंडीमिथालिन और सल्फ़ोसल्फ्यूरॉन; **फफूंदनाशी:** कार्बेन्डाजिम, कैप्टन, डिनोकैप, मैनकोजेब, थियोफ़ेनेट मिथाइल, थिरम, जिरम और जिनेब हैं।

उद्योग के एक विशेषज्ञ ने कृषक जगत को बताया कि अधिकांश राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा इन उत्पादों की सिफारिश की जाती है और ये राज्यो में कृषि संबंधी फसल पैकेज (package of practice) का हिस्सा हैं।

डॉ. राजेंद्रन समिति

केंद्र सरकार ने 2021 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. टी. पी. राजेंद्रन की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया था, जो प्राप्त आंकड़ों के साथ-साथ आपत्तियों के सुझावों की समीक्षा करेगी।

सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेप

सुप्रीम कोर्ट ने 27 मार्च को केंद्र सरकार से प्रस्तावित 27 पेस्टिसाइड में से तीन पेस्टिसाइड पर प्रतिबंध को सही ठहराने को कहा था। एक एनजीओ द्वारा दायर याचिका में सभी 27 पेस्टिसाइड पर प्रतिबंध लगाने की मांग की गई है। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जेबी पारदीवाला की बेंच केंद्र सरकार के औचित्य और याचिका की समीक्षा करेगी।

बेरोजगारी भत्ता योजना

मुख्यमंत्री ने 66 हजार युवाओं के खाते में डाली 16 करोड़ रूपए की राशि

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बेरोजगारी भत्ता योजना के पात्र पाए गए 66 हजार 256 हितग्राहियों के खाते में 16 करोड़ रूपए की राशि अंतरित की। इन हितग्राहियों के खाते में 25 सौ रूपए अंतरित किए गए, जो प्रतिमाह दिए जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने वर्चुअल कार्यक्रम में युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि भत्ते की राशि आप सभी की उच्च शिक्षा में, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारियों में तथा प्रशिक्षण के दौरान उपयोगी होगी। आप सभी के रोजगार की उचित व्यवस्था हो, इसके लिए भी हमने कार्य योजना बनाई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आप सभी बहुत स्वाभिमानी है, चूंकि प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं अथवा स्वरोजगार के लिए अपने को तैयार कर रहे हैं। इस अवधि में जरूरी खर्चों के लिए आप को इस मासिक भत्ते से सहयोग मिल पाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा जैसा कि युवाओं से चर्चा की सभी के मन में भविष्य को लेकर बहुत से सपने हैं। उन सपनों को पूरा करने के लिए उन्हें थोड़ा वक्त चाहिए। वे अपने परिवार का बोझ बांटना चाहते है। अब वे न केवल अपनी छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा कर पाएंगे। साथ ही उचित रोजगार के लिए अपने को तैयार भी करेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बेरोजगारी भत्ते के लिए आवेदन बेहद सरल है, इसके लिए केवल ऑनलाईन आवेदन करना होता है।

डीबीटी से राशि चली जाती है। एक महीने में हमने 16 करोड़ रुपये से अधिक की राशि अंतरित कर दी है। पहले इसके पात्रता नियम काफी कठिन थे, अब यह सरल हैं। ढाई लाख रुपये तक के आय वाले इसके पात्र हैं। मैं आज इस राशि का वितरण कर रहा हूं लेकिन सच्ची खुशी तब होगी जब आपको रोजगार मिलेगा। इसके लिए भी 6 महीने की कार्य योजना बनाई है। आपके प्रशिक्षण के लिए भी पूरी व्यवस्था है। भर्तियों की हमारी तैयारी पूरी है।

छत्तीसगढ़ की दो पंचायतों को मिला राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार

रायपुर। छत्तीसगढ़ की दो पंचायतों को राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू की अध्यक्षता में नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में सरगुजा जिले के जनपद पंचायत लुन्ड्रा के ग्राम पंचायत नागम तथा धमतरी जिले के नगरी पंचायत के ग्राम सांकरा को पुरस्कृत किया गया। ग्राम पंचायत नागम को गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका संवर्धन श्रेणी में तथा सांकरा को स्वस्थ पंचायत थीम में पुरस्कृत किया गया। इन ग्राम पंचायतों को पुरस्कार के साथ ही 50-50 लाख रूपए की राशि भी प्रदान की गई।

उल्लेखनीय है कि पूरे देश में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों के लिए 43 ग्राम पंचायतों को पुरस्कार दिये गये। छत्तीसगढ़ उन चुनिंदा राज्यों में शामिल है जिन्हें एक से अधिक पुरस्कार प्राप्त हुए। ग्राम पंचायत नागम के सरपंच श्री भंडारी राम पैकरा तथा ग्राम पंचायत सांकरा की सरपंच श्रीमती शशि ध्रुव ने केंद्रीय मंत्री पंचायत एवं ग्रामीण विकास श्री गिरिराज सिंह के हाथों पुरस्कार ग्रहण किया। इस मौके पर केंद्रीय राज्य मंत्री ग्रामीण विकास श्री फग्गन सिंह कुलस्ते और केन्द्रीय राज्य मंत्री पंचायत राज श्री कपिल मोरेश्वर पाटिल भी मौजूद रहे।

जल आवंटन करने की शीघ्र कार्यवाही करें

मुख्य सचिव ने की जल आवंटन की समीक्षा

रायपुर। मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन ने यहां मंत्रालय महानदी भवन में राज्य में जल जीवन मिशन के अंतर्गत स्वीकृत समूह नल-जल योजनाओं के लिए जल आवंटन की गहन समीक्षा की। मुख्य सचिव ने जल-जीवन मिशन के अंतर्गत स्वीकृत विभिन्न समूह नल-जल योजनाओं में सम्मिलित ग्रामों में नल से पेयजल प्रदाय की अद्यतन स्थिति के बारे में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारियों से जिलेवार जानकारी ली। उन्होंने समूह नल-जल योजनाओं हेतु जल स्त्रोतों नदी, एनीकट और बांध जिनमें पानी उपलब्ध होता है, जल आवंटन के संबंध में जल संसाधन विभाग के अधिकारियों से जल आवंटन करने शीघ्र कार्यवाही करने के निर्देश दिए है। बैठक में जल संसाधन विभाग के सचिव श्री अन्बलगन पी., लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के सचिव डॉ. एस.भारतीदासन, जल जीवन मिशन के संचालक श्री आलोक कटियार, जल संसाधन एवं लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के मुख्य अभियंता सहित सभी जिलों के प्रमुख अधिकारी शामिल हुए।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, प्लाट नं. 40/44, इण्डस्ट्रियल एरिया बीरगांव रोड, उरला रायपुर (छत्तीसगढ़) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े
अमृत जगत
डेढ़ फीट अंतर से कतारें रखावें, दो इंच अंतर से बीज डलावें।
एक-डेढ़ इंच गहरा बीज बुआवें, सोयाबीन बोना कृषिवेत्ता बतावें।।

स्वयं का बीज बनायें

उत्पादन की प्रथम सीढ़ी अच्छा बीज होता है और अच्छे बीज की प्राप्ति हेतु कृषक काफी दौड़-धूप करता है क्योंकि उसे मालूम है कि उन्नत बीज ही सफल खेती का पहला कदम है। अच्छे बीज के लिये प्रयास जरूरी है। परंतु हर वर्ष यह दौड़ नहीं होनी चाहिये क्योंकि अच्छा बीज स्वयं कृषकों के खेतों में उपलब्ध है। वर्तमान का युग लाभकारी खेती और स्वावलम्बी कृषक का है किसी भी जिन्स का आधार बीज यदि आपने लगा रखा है तो सतत खेत में निरीक्षण करते रहें और अपने खेत के उस हिस्से पर नजर रखें जो सामान्य से अधिक अच्छा दिख रहा है। हम गेहूं का ही उदाहरण लें तो जिस किसी क्षेत्र में समान बालियाँ दिखाई दे रही हों, एक सी ऊंचाई के पौधे हों उस क्षेत्र के पौधों का चयन बीज तैयार करने के लिये कर लें। गेहूं की सबसे खतरनाक बीमारी कंडुआ जो बीज जनित होती है जिसके कारण स्वस्थ बालों में बीज की जगह काली चूर्ण भरी हो उसका निरीक्षण बड़ी सावधानी से करें और उक्त क्षेत्र की फसल की उपज बीज के मतलब से कदापि नहीं रखें हमें आज जो स्वस्थ दाना दिख रहा है उसमें फूल अवस्था में ही कंडुआ रोग की कवक प्रवेश कर चुकी है और भविष्य में यदि इस तरह के अनाज को बीज की तरह उपयोग किया गया तो गेहूं बोकर कंडुआ काटने की नौबत आने से कोई नहीं रोक पायेगा केवल कंडुआ ग्रसित पौधों को हटाने से यह नहीं समझें कि बाकी फसल ठीक है और उसका अनाज आने वाले साल में बीज जैसा उपयोग किया जा सकता है अतः आने वाले वर्ष के लिये, स्वयं के बीज बनाने के लिये ऐसे क्षेत्र का चयन जरूरी होगा जहां पर दूर-दूर तक कंडुआ के पौधे नहीं है। समान ऊंचाई वाले एक सी बालों वाले क्षेत्र में घूम कर खरपतवार के पौधे विशेषकर गेहूं का मामा तथा बथुआ के पौधे जिसमें हजारों बीज बन चुके हैं सावधानी पूर्वक जड़ समेत निकाल कर खाद के गड्ढों में डाल दें। चयनित क्षेत्र में ऐसे गेहूं के पौधों को भी निकाल लें जो

दूसरी किस्मों के हैं इस क्रिया को रोगिंग कहा जाता है। रोगिंग करने के पश्चात पूर्ण रूप से यह सुनिश्चित कर लें कि पत्तियों पर झुलसा रोग तो नहीं है क्योंकि यह झुलसा रोग भी पत्तियों के बाद कोमल दानों पर आक्रमण करके अपनी जगह बना लेता है दानों पर काला धब्बा ब्लेक प्वाईट आमतौर पर देखा जाता है जो कालान्तर में अंकुरण के समय बाधक सिद्ध होता है और खेत में समुचित पौध संख्या नहीं बनने देता है। चयनित क्षेत्र में यह भी देख लें कि चूहे के बिल तो नहीं हैं क्योंकि हरी बालियों को काटकर खाना कम परंतु नुकसान करना चूहों की फितरत में रहता है। यदि चूहों के सक्रिय बिल मौजूद हों तो चूहों के नियंत्रण का समुचित उपाय भी करने में कोई कसर नहीं की जाना चाहिए इसके लिये विष प्रपंच जरूरी होता है। दो-तीन दिन तक बिना विष से बनी आटे, गुड़, तेल की गोलियों का भोजन चूहों को आकर्षित करने के लिये परोसा जाये फिर विष मिलाकर गोली रखें ताकि अधिक से अधिक चूहे नष्ट होकर बीज के लिये चयनित फसल को हानि नहीं पहुंचा पायें। समय -समय पर इस चयनित क्षेत्र की फसल की देखभाल अधिक तत्परता से की जाये और जब कभी भी फसल कटने लायक हो जाये इस चयनित क्षेत्र की फसल अलग से काटी जाये इसकी गहाई तथा उड़ाई भी अलग से हो तथा यथासम्भव नये बारदाने, कोठियों में अच्छी तरह सुखाकर ही इस अनाज को जो आने वाले वर्ष में बीज माना जायेगा को भंडारित किया जाये। उल्लेखनीय है कि हर वर्ष नये बीज की तलाश में श्रम और अर्थ व्यय करने से कहीं अच्छा है कि थोड़ी मेहनत करके स्वयं अपने खेत में ऊग रहे अनाज से ही शुद्ध बीज तैयार किया जाये। ध्यान रहे बीज एक ऐसा आदान है जिस पर सबसे अधिक खर्च होता है यदि इस खर्च में कमी हो जाये तो निश्चित ही लाभकारी खेती का सपना साकार हो सकता है जो आपके हाथों में है।

आदिवासियों पर आधारित विकास

● भारत डोगरा

'वागधारा' (बांसवाडा, राजस्थान) देश की उन गिनी-चुनी संस्थाओं से है जिन्होंने 'स्वराज' के सिद्धान्त को केन्द्र में रखकर दो दशकों से ग्रामीण समुदायों के बीच ऐसे प्रयास किए हैं जो अब तक लगभग 1000 गांवों में पहुंच गए हैं। गांवों में इन प्रयासों ने आत्म-निर्भरता को बढ़ाया है और प्रवासी-मजदूरी पर निर्भरता भी कम की है। ये प्रयास लगभग एक लाख परिवारों के लिए आशा का स्रोत बने हैं। अपनी अनेक विशेषताओं व गुणों के साथ आदिवासी समुदायों की जीवन-शैली ग्राम-स्वराज व आत्मनिर्भरता के अधिक अनुकूल है, पर सरकारी व कंपनियों द्वारा अपनाई गई नीतियों के दबाव में हाल के दशकों में स्वराज व आत्मनिर्भरता की इन प्रवृत्तियों में कमी आई है। इसकी वजह से आदिवासी समुदायों में प्रवासी-मजदूरी पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। इन स्थितियों में 'ग्राम-स्वराज' व 'आत्मनिर्भरता' की नीतियों को नए सिरे से प्रतिष्ठित करने के प्रयास सार्थक हैं और 'वागधारा' ने इसी राह को अपनाया है।

इसके लिए 'वागधारा' ने आदिवासियों, विशेषकर भील समुदाय के परंपरागत ज्ञान को समझने और इसे समुचित महत्व देने का रास्ता चुना है। 'वागधारा' का कार्यक्षेत्र वे गांव हैं जो राजस्थान, मध्यप्रदेश व गुजरात की सीमाओं पर बसे हैं और जहां आदिवासी समुदायों की बहुलता है। यहां 'वागधारा' ने 'स्वराज' आधारित अपने कार्य तीन सिद्धांतों के अंतर्गत किए हैं- सच्ची खेती, सच्चा बचपन और सच्चा लोकतंत्र।

'वागधारा' के जयेश जोशी के मुताबिक सच्ची खेती आदिवासी, विशेषकर भील समुदाय के परंपरागत ज्ञान और व्यवस्थाओं पर आधारित है। 'हलमा पद्धति' के अंतर्गत किसान एक-दूसरे की सहायता से कृषि कार्य, बिना किसी मजदूरी भुगतान के कर लेते हैं, यानि पैसे देकर कार्य करवाने की कोई जरूरत नहीं होती। यह व्यवस्था आपसी सहयोग पर आधारित है।

'हांगड़ी' मिश्रित-खेती की एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें अनेक अच्छे पोषण की फसलों को एक साथ उगाने और एक-दूसरे की पूरक होने की सोच निहित रही है। ऐसी परंपरागत व्यवस्थाओं के गुणों व महत्व को पहचानते हुए 'वागधारा' ने इसे सशक्त करने व इसकी सोच के अनुरूप आगे बढ़ाने को महत्व दिया है। इस तरह अपने परंपरागत ज्ञान से समुदाय में आत्मविश्वास नए सिरे से प्रतिष्ठित हुआ है। इसे बढ़ाने, प्रवासी मजदूरी पर निर्भरता छोड़ने के लिए समुदाय प्रेरित हुए हैं। 'वागधारा' के अनुसंधान से स्थापित हुआ है कि हाल के परंपरागत ज्ञान पर अतिक्रमणों के बावजूद इस क्षेत्र में 100 से अधिक खाद्य उगाए जाते हैं या एकत्र किए जाते हैं। इतनी जैव-विविधता से समृद्ध समुदाय को फिर पिछड़ा हुआ क्यों कहा जाता है, जबकि दो-तीन फसलों पर आश्रित गांवों को 'विकसित' मान लिया जाता है? ऐसे सवाल उठाने से भी इन समुदायों का अपनी क्षमताओं और ज्ञान में आत्मविश्वास लौटता है।

स्थानीय ज्ञान, पड़ौस के संसाधन और समाज की देसी बनक के आधार पर विकास योजनाओं को रचा जाए तो नतीजा क्या, कैसा हो सकता है? इसे जानने के लिए भील आदिवासियों की 'वागधारा' जैसी संस्थाओं के काम पर नजर डालना चाहिए। करीब एक हजार गांवों में जारी उनके काम ने कई बेहतरीन उपलब्धियां हासिल की हैं।

'वागधारा' ने इस परंपरागत ज्ञान का सम्मान करते हुए इससे जुड़ी नई वैज्ञानिक सोच को भी आगे बढ़ाया है। गोमूत्र व गोबर का उपयोग पहले जैसे करते हुए इसकी क्षमताओं को किस तरह अधिक महत्व देते हुए बढ़ाया जा सकता है? विभिन्न पेड़ों को छोटे किसानों की खेती में समुचित महत्व कैसे दिया जाए? पशुपालन, कृषि व बागवानी में कैसा समन्वय हो? इन विषयों पर परंपरागत-ज्ञान व नई जानकारियों को आपसी विमर्श से आगे बढ़ाया गया है। बीजों को बचाने, उनकी गुणवत्ता बेहतर करने, मिट्टी व जल-संरक्षण के तौर-तरीके बेहतर करने के कार्य भी ऐसे ही विमर्श के आधार पर आगे बढ़े हैं। प्राकृतिक खेती नए सिरे से पनपी है। जो रासायनिक खाद पर निर्भर हो गए थे, उनमें से अनेक ने इसे पूरी तरह छोड़ दिया है व कुछ धीरे-धीरे छोड़ रहे हैं।

बकरी पालन पहले भी महत्वपूर्ण रहा है, आज भी है। दूध के लिए अनेक किसान अब भैंस भी रख रहे हैं। 'मोटे अनाजों' व 'मिलेट' के महत्व को नए सिरे से पहचाना जा रहा है। सब्जियों के उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है व पोषण वाटिकाएं, 'किचन गार्डन' भी बहुत हरे-भरे हैं।

'वागधारा' का दूसरा सिद्धान्त है, 'सच्चा बचपन।' इसके अंतर्गत विभिन्न गांवों में 'बाल अधिकार मंच' स्थापित करने, सभी बच्चों को स्कूली शिक्षा सुनिश्चित कराने, शोषण से प्रभावित बच्चों की रक्षा करने, अनाथ बच्चों तक जरूरी सुविधाएं पहुंचाने, शिक्षा व बाल-विकास संबंधी मामलों में बच्चों की भागीदारी बढ़ाने व विशेष पोषण अभियानों जैसे कार्य निरंतरता से किए जाते हैं।

दूसरी ओर, सरकार की विभिन्न परियोजनाओं व कार्यक्रमों के बेहतर क्रियान्वयन के प्रयास भी निरंतरता से किए जाते हैं, विशेषकर 'महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना' ('मनरेगा') जैसे कार्यक्रम, जिनसे जल व मिट्टी संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण कार्यों की अधिक संभावनाओं को प्राप्त किया जाता है। इनमें विभिन्न ग्रामीण समुदाय अपनी स्थानीय योजनाएं तैयार करते हैं। **(सप्रेस)**

◆ 63 साल पूर्व इस सप्ताह ◆ कृषक जगत

(कृषक जगत : 2 मई 1960 के अंक से)

समाचार

- सरकारी खाद्य की क्रय नीति से किसानों में असंतोष, भूख हड़ताल
- तीसरी पंचवर्षीय योजना : किसानों की कठिनाइयां
- भारत में खाद्य उत्पादन के लिए एक करोड़ 5 लाख डॉलर
- कृषि भूमि पर सम्पदा कर, लोकसभा में विधेयक पारित
- रसायनिक खाद कारखाने के लिए इटारसी का चयन
- ग्रामीण कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठक
- मध्य प्रदेश को सिंचाई योजनाएं

आलेख

- लाल मिर्च की खेती

पेस्टिसाइड डीलर, वितरकों व निर्माताओं के कर्तव्य व जिम्मेदारियां

- **प्रो. (डॉ.) जे. एन. भाटिया**
  सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक (प्लांट पैथोलॉजी), सीसीएस एचएयू हिसार, हरियाणा
- **आदित्य,** कृषि और पर्यावरण विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान (निफ्टेम-के), सोनीपत, हरियाणा

ई-मेल : jnbhatia06@gmail.com
मो. : 91-9416654847

हरित क्रांति की सफलता से भारत जहां एक और खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हुआ है वहीं दूसरी ओर बढ़ती हुई जनसंख्या की जरूरतों की पूर्ति करने के साथ-साथ खाद्यान्न का निर्यातक भी बन गया है। यह सब अर्जित करने में उन्नत किस्म के बीजों खाद व उर्वरकों का प्रयोग तथा कीटनाशक रसायनों का योगदान सर्वोपरि है। आज के दिन हमारे देश में 291 पेस्टिसाइड कृषि के लिए पंजीकृत हैं, जिसमें कीटनाशक रसायनों का हिस्सा लगभग 80.5 प्रतिशत है। इसके अलावा लगभग 15.8 प्रतिशत खरपतवारनाशी, 1.5 फफूंदनाशक तथा 2.0 प्रतिशत अन्य रसायनों का प्रयोग किया जा रहा है। हालांकि भारत में कीटनाशकों का प्रयोग शुरु से ही अन्य देशों की तुलना से कम ही किया जा रहा है, फिर भी कीटनाशकों के अवशेषों का खाद्य पदार्थ व पर्यावरण में निर्धारित मात्रा में अधिक पाया जाना चिंता का विषय है। भारतवर्ष में कीटनाशी डीलरों की संख्या 3 लाख से भी ऊपर पहुंच चुकी है तथा देहात में किसान व डीलरों का एक अटूट रिश्ता है। कीटनाशक अधिनियम 1968 में विशेष तौर पर इस बात का उल्लेख किया गया है कि जो भी कीटनाशक/रसायन हम खेती-बाड़ी में प्रयोग कर रहे हैं, वह मानव, पशु, पक्षी, जली जलीय, जंगली जानवर व पर्यावरण के लिए सुरक्षित होनी चाहिए। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अधिनियम में पीड़कनाशी बेचने वाले डीलरों, वितरकों और निर्माताओं की भी जिम्मेदारी रखी गई है कि वह उन्हें बखूबी निभाकर मानव जाति व पर्यावरण को सुरक्षित रखने में अपना भरपूर योगदान दें।

पेस्टिसाइड डीलर के कर्तव्य व जिम्मेदारियां

● कीटनाशक अधिनियम 1968 के अंतर्गत परिभाषाएं (ग) के अनुसार डीलर का अर्थ है कि कीटनाशक बेचने का व्यवसाय करने वाले व्यक्ति चाहे तो वह थोक या खुदरा व्यापारी हो और इसमें डीलर का एजेंट भी शामिल है।

● कीटनाशकों व अन्य रसायनों का क्रय-विक्रय करने से पहले सक्षम प्राधिकारी से लाइसेंस अवश्य प्राप्त कर लें क्योंकि कानून के अंतर्गत कीटनाशकों की बिक्री के लिए प्रदर्शन या भंडारण या वितरण के लिए वैध लाइसेंस होना चाहिए।

● कीटनाशकों को बेचने के लिए बिक्री की एक पुस्तिका लगाएं जिसमें बेची गई कीटनाशकों व अन्य रसायनों का किसान सहित ब्यौरा दर्ज हो।

● कीटनाशक विक्रेताओं को चाहिए कि वह यदि सल्फर की बिक्री कर रहा हो तो उसकी खरीद-फरोख्त का अलग से पुस्तिका लगाएं ताकि सल्फर की चोरी होने पर नजदीकी पुलिस स्टेशन या कृषि विभाग को सूचित कर सकें।

● डीलरों को चाहिए कि वह उचित बिल इन्वॉयस के साथ वैद्य स्रोत से ही कीटनाशक रसायनों की खरीद-फरोख्त करें।

● कीटनाशक खरीदने पर हर किसान को उचित बिल दें तथा बिल में बैच संख्या, विनिर्माण और सुनाती तिथि का ब्यौरा जरूर उपलब्ध कराएं।

● हर डीलर को चाहिए कि वह अपने लाइसेंस के प्रति अपनी दुकान के परिसर में एक विशिष्ट स्थान पर प्रदर्शित करें।

● सभी डीलरों को चाहिए कि दैनिक आधार पर उसके दृश्य आयोजित कीटनाशकों के स्टाक की मात्रा तथा ऐसे कीटनाशकों की कीमतों या दरों की एक सूची अपनी दुकान के आगे लगाएं (10 डी)।

● यदि कोई डीलर अत्यधिक जहरीले कीटनाशकों एलमुनियम फास्फाइड, मिथाइल ब्रोमाइड, एथिलीन डाई ब्रोमाइड की बिक्री करना चाहता है तो उसके लिए अलग से लाइसेंस लें जो 5 वर्ष तक मान्य रहता है।

● अधिनियम के तहत यह अत्यधिक जरूरी है कि हमेशा कीटनाशक रसायन को निर्माता की मूल पैकिंग में ही बेचे।

● डीलरों को चाहिए कि वह अपने भंडार में कीटनाशक, फफूंदनाशक व खरपतवारनाशक को अलग-अलग तरकीब से रखें।

● सभी डीलरों की यह भी जिम्मेवारी बनती है कि वह अपने भंडार में कीटनाशकों व अन्य रसायनों की स्टॉकिंग, खपत व सीजन के अनुसार ही भंडार करें।

● केवल पंजीकृत कीटनाशक व अन्य रसायन का भंडार, वितरण और बिक्री पंजीकरण के नियम एवं शर्तों के अनुरूप ही करें।

● सभी डीलरों को चाहिए कि वह किसानों को लेवल व लीफलेट (पत्रक) के अनुसार प्रयोग की मात्रा, समय और तरीके के बारे में भी सही जानकारी उपलब्ध कराएं।

● घटिया नकली और कम मानक वाले कीटनाशकों एवं रसायनों की बिक्री, स्टॉकिंग, वितरण से बचें क्योंकि कीटनाशक अधिनियम 1968 के तहत यह एक गंभीर अपराध है।

● सभी डीलर किसान को कोई ऐसी सलाह वह सिफारिश नहीं करें जिनका उल्लेख कीटनाशक लेवल व लीफलेट में ना किया गया हो।

● जिम्मेदार व्यक्ति की भूमिका निभाते हुए नकली कीटनाशकों के बारे में पुलिस या कृषि विभाग के अधिकारियों को सूचित करें।

● यदि कोई सहायक या एजेंट अपनी दुकान पर नियुक्त कर रखा है तो उसका शुरू में ही चिकित्सा परीक्षण करा ले तथा समय-समय पर उसकी जांच अवश्य जरूर करवाते रहें।

● कीटनाशक को उनकी समाप्ति की तारीख के बाद ना बेचे। यह भी दंडनीय अपराध है।

● कीटनाशकों को प्रयोग करने से पहले किसानों को लेबलों और लीफलेट पढ़ने की जरूर सलाह दें तथा पैकिंग और प्रयुक्त सामग्री के उचित निपटान के बारे में किसानों को जागरूक किया जा सके।

पेस्टिसाइड वितरक के कर्तव्य एवं जिम्मेदारियां

● कीटनाशक वितरक, विनिर्माणकरता, आयातक, खुदरा विक्रेता व थोक विक्रेता सभी हो सकते हैं। यह सब कीटनाशकों के सुरक्षा व पर्यावरण प्रदूषण कम करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। कीटनाशक अधिनियम के तहत इनके मुख्य कर्तव्य और जिम्मेदारियों का भी उल्लेख किया गया है।

● कीटनाशकों व अन्य रसायनों का विक्रय से पहले सक्षम प्राधिकारी से लाइसेंस अवश्य प्राप्त कर लें।

● कीटनाशकों को बेचने पर पूरा रिकॉर्ड एक पुस्तिका में दर्ज करें।

● वितरक यदि सल्फर की बिक्री कर रहा है तो उसका बिक्री का विवरण पुस्तिका में दर्ज करें। चोरी होने पर पुलिस व कृषि विभाग को अवश्य सूचित करें।

● वितरक को चाहिए कि वह उचित बिल इन्वॉयस के साथ ही अपने उत्पादों की बिक्री करें।

● हर वितरक को चाहिए कि वह अपने लाइसेंस की प्रति विक्रय परिसर में विशिष्ट स्थान पर प्रदर्शित करें।

● सभी वितरकों को चाहिए कि दैनिक आधार पर विक्रय की गई कीटनाशकों के रसायनों का ब्यौरा वह एक पुस्तिका में अंकित करें।

● कीटनाशक अधिनियम के तहत यह अत्यधिक जरूरी है कि हमेशा कीटनाशक/रसायनों को निर्माता की मूल पैकिंग में ही बेचें।

● वितरकों को कीटनाशक/रसायन बेचते समय खरीददार को उनका पूरा विवरण जैसे कीटनाशक की क्षमता, जहरीलापन, एम.आर.एल व अन्य रखी जाने वाली सावधानियों के बारे में जरूर बताएं ताकि उस से होने वाले प्रदूषण के खतरों से बचा जा सके।

● कीटनाशक बेचते समय खरीददार को उचित बिल/इन्वॉयस जरूर दें तथा उसमें बैच संख्या व समाप्ति की तिथि अवश्य डालें।

● वितरकों को चाहिए कि वह माहवार बेची गई कीटनाशकों व रसायनों का विवरण अपने लाइसेंस अधिकारी को महीने के समापन से 15 दिन तक जरूर उपलब्ध करवाएं।

● सभी वितरण उपलब्ध कीटनाशक रसायनों की सूची व मूल्य दर बिक्री की सूची परिसर में जरूर लगाएं।

● घटिया नकली और कम मानक वाले कीटनाशक व अन्य रसायनों की बिक्री, स्टॉकिंग, वितरण से बचें क्योंकि यह दंडनीय अपराध है।

● कभी भी खरीददार को अधिक स्टॉकिंग पर ज्यादा खरीद के लिए प्रोत्साहित ना करें।

● कोई भी कीटनाशक या रसायन का आयात केवल वैध प्रमाण पत्र या पंजीकृत के बाद ही करें।

● किसी भी हालत में क्षतिग्रस्त व रिसाव वाले कीटनाशक/ रसायन वाले डिब्बे ना दें।

● कभी भी उन कीटनाशकों/ रसायनों का विक्रय ना करें जो लेवल नहीं की गई है और विदेशी भाषा में लेवल की गई हैं।

● कीटनाशकों/रसायनों का उनकी समाप्ति के बाद बिक्री ना करें।

● एक वितरक का यह भी दायित्व बनता है कि वह अपने उत्पादों की डिलीवरी तुरंत व कम से कम समय में सुनिश्चित करें।

● वितरक यह भी सुनिश्चित करें कि नकदी या क्रेडिट मेमो जारी करना और रजिस्टर खातों और रिकॉर्ड की पुस्तिका को पूरा करना व रखरखाव सही ढंग से होना चाहिए।

● सभी वितरकों को यह भी फर्ज है कि भारत सरकार के सुरक्षित अन्न उत्पादन से जुड़े तथा देशवासियों के स्वास्थ्य और वातावरण सुरक्षित रखने में अपना भरपूर योगदान दें।

पेस्टिसाइड निर्माताओं के कर्तव्य व जिम्मेदारियां

● कीटनाशक, निर्माणकर्ता, कीटनाशकों को फॉर्म्युलेट कर सकता है तथा बाहर से आयात किए हुए तकनीकी सक्रिय घटक की दोबारा से पैकिंग कर सकता है तथा इनका भी देशवासियों के स्वास्थ्य पक्षी, जंगली जानवर, जलीय जीव जंतु व पर्यावरण को सुरक्षित रखने में एक अहम योगदान है। आपको ज्ञात होगा कि जिन भी कीटनाशकों, खरपतवारनाशियों, फफूंदनाशियों व अन्य रसायनों का निर्माण हो रहा है उनके उपयोग दर भी बहुत कम है तथा उनके अवशेष भी मिट्टी पानी मानव शरीर में जल्दी ही टूट कर खत्म हो जाते हैं।

● यदि कोई भी व्यक्ति किसी भी कीटनाशक या अन्य रसायनों का विनिर्माण करना चाहता है तो उसे निर्माता का लाइसेंस लेना जरूरी है।

● विनिर्माणकर्ता का यह फर्ज है कि वह अपने उत्पाद के बारे में वितरक, डीलर, खुदरा वितरकों को प्रशिक्षित करें तथा बताएं कि यह उत्पाद किन-किन हालातों में अच्छे परिणाम देता है तथा सुरक्षा हेतु किन-किन सावधानियों का पालन करना पड़ेगा।

● जितने भी कर्मचारी नियुक्त करें वह निर्माण में निपुण हो तथा सभी की प्राथमिक चिकित्सा अवश्य करवा लें, समय-समय पर भी उनकी सुरक्षा हेतु चिकित्सा करवाना अत्यंत जरूरी है।

● यदि कोई भी सक्रिय घटक बाहर से आयात करना पड़े तो संबंधित अधिकारियों से वैद्य प्रमाण पत्र हासिल कर लें तथा नए उत्पादों का पंजीकृत भी अवश्य करवा लें।

● कीटनाशक व अन्य रसायन का निर्माण उसी मकसद से करें जिस उद्देश्य हेतु इनका पंजीकरण किया गया है।

● निर्माण कर्ताओं को हमेशा कीटनाशक/ रसायन फॉर्मूलेशन में ही उपलब्ध करवाने चाहिए ताकि वह सीधे तौर पर प्रयुक्त किया जा सके।

● निर्माणकर्ता को कीटनाशकों अन्य रसायनों की पैकिंग पर उसकी सुरक्षित हैंडलिंग व अन्य विवरण दिया जाना चाहिए।

● पैकिंग इस प्रकार की हो जो कि पानी, आग से प्रभावित ना हो तथा जो प्रयोग करने में भी आसान व सुलभ हो तथा पंजीकृत के नियमों के अनुरूप हो।

● कीटनाशकों के कंटेनर/ डिब्बों पर रजिस्ट्रेशन नंबर के अलावा और कोई निर्देश नहीं दिया जाना चाहिए। उत्पाद हमेशा खुले हवादार, पक्के गोदाम में भंडारित होनी चाहिए तथा वहां पर पानी व आग बुझाने के संयंत्र का विशेष प्रबंध होना चाहिए।

● निर्माणकर्ता यह भी सुनिश्चित कर लें की नगदी या क्रेडिट मेमो जारी करना रजिस्टर, खातों और रिकॉर्ड की पुस्तकों को पूरा करना है व उनका रखरखाव सही ढंग से होना चाहिए।

मिर्च को कीट-रोग से बचायें

• डॉ. एस. के. त्यागी
मो. : 8770083621

कीट प्रबंधन

(अ) रसचूसक कीट

थ्रिप्स – इस कीट का वैज्ञानिक नाम

(सिट्रोथ्रिटस डोरसेलिस हुड़) है। यह छोटे-छोटे कीड़े, पत्तियों एवं अन्य मुलायम भागों से रस चूसते हैं। इसका आक्रमण प्रायः रोपाई के 2-3 सप्ताह बाद शुरु हो जाता है। फूल लगने के समय प्रकोप बहुत भयंकर हो जाता हैं पत्तियां सिकुड़ जाती है तथा मुरझा कर ऊपर की ओर मुड़ जाती हैं और नाव का आकार ले लेती है। थ्रिप्स द्वारा क्षतिग्रस्त पौधों को देखने से मोजेक रोग का भ्रम होता है। पौधे की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उपज बहुत कम हो जाती है।

माहू – (एफिस गोसीपाई ग्लोवर)

यह कीट पत्तियों एवं पौधों के अन्य कोमल भागों से रस चूसकर पत्तियों एवं कोमल भागों पर मधुरस स्त्राव करते हैं, जिससे सूटी मोल्ड विकसित हो जाती है। परिणाम स्वरुप फल काले पड़ जाते हैं। यह कीट मोजेक रोग का प्रसार करता है।

सफेद मक्खी – (बेमेसिया टेबेकाई)

इस कीट के शिशु एवं वयस्क पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते हैं। कीट पर्ण कुंचन रोग को एक पौधे से दूसरे पौधे में फैलाते हैं।

नियंत्रण

● कीट की प्रारम्भिक अवस्था में नीमतेल 5 मिली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ● डायमिथिएट 30 ईसी या ट्राइजोफॉस 40 ईजी की 30 मि.ली. मात्रा तो 15 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ● कीट के अत्यधिक प्रकोप की अवस्था में 15 ग्राम एसीफेट या इमीडाक्लोप्रिड 18.5 एस.एल. की 5 मिली मात्रा 15 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ● फेनप्रोपाथ्रिन 0.5 मिली मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मकड़ी –

इस कीट का वैज्ञानिक नाम हेमीटारसोनेमस लाटस बैंक है। यह छोटे-छोटे जीव होते हैं, जो पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते हैं। परिणामस्वरूप पत्तियाँ सिकुड़ कर नीचे की ओर मुड़ जाती हैं।

नियंत्रण

● क्लोरफेनापायर 1.5 मि.ली./ लीटर या एमामेक्टिन 1.5 मिली/ लीटर या स्पाइरोमेसिफेन 0.75 मिली/लीटर या वर्टीमेक 0.75 मि.ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

छेदक कीट

फल छेदक – (स्पेडोप्टेरा लाइटूरा फेब्रीसस)

इस कीट की इल्ली फलों में छिद्र करके नुकसान पहुंचाती हैं। यह फलों में गोल छिद्र बनाकर उसके अंदर के भाग को खाती है। परिणाम स्वरूप फल झड़ जाते हैं।

नियंत्रण

● इस कीट की प्रारम्भिक अवस्था में नीमतेल 5 मिली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ● स्पाइनोसेड 0.4 मि.ली. या इण्डोक्साकार्ब 1 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़कें।

कटुआ इल्ली (एग्रोटिस इप्सिलोन)– इस कीट की इल्ली रात्रि में पौधों को आधार से काट देती हैं। दिन में यह इल्लियाँ मिट्टी की दरारों में छुप जाती हैं।

सफेद लट – (एनोमाला बेनगेलेन्सिस होलोट्राइका कनसेनगुईना एवं होलोट्राइका रेनाउड़ी)

पहली वर्षा के समय इस कीट की मादा भूमि में अण्डे देती है। जिनसे ग्रब निकलते हैं जो कि पौधों की जड़ों को खाते हैं। ग्रसित पौधों के पास से मिट्टी से इल्ली निकाल कर उन्हें नष्ट करें।

नियंत्रण

● नीम की खली 1000 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की तैयारी के समय दें।

● क्लोरोपायरीफॉस 0.1 प्रतिशत का टोआ दें।

रोग प्रबंधन

आर्द्रगलन –

यह रोग पीथियम एफिनिडेडरमेटम फाईटोप्थोरा स्पी नामक फफूंद से होता है। इस रोग में भूमि की सतह से पौधा गलकर नीचे गिर जाता है। नर्सरी में पौधों की सघनता, अधिक नमी, भारी मिट्टी, जल निकासी का न होना, उच्च तापमान रोग फैलाते हैं।

एन्थ्रेक्नोज –

मिर्च का यह अतिव्यापक रोग है। यह रोग कोलेटोट्राइकम कैप्सी की नामक फफूंदी से होता है। विकसित पौधों पर रोग के कारण शाखाओं का कोमल ऊपर का भाग सूख जाता है। बाद में सूखने की क्रिया नीचे की ओर बढ़ती है। फलों पर यह रोग पकने की अवस्था में होता है।

जब फल लाल होने लगते हैं उन पर छोटे काले और गोल धब्बे दिखाई पड़ते हैं ये धब्बे फल की लंबाई में बढ़ते हैं। बाद में इनका रंग धूसर हो जाता है। अंतिम अवस्था में फल काले होकर गिर जाते हैं।

उकटा रोग –

यह रोग फ्यूजेरियम आक्सीस्पोरम उप जाति लाइकोपर्सिकी नामक फफूंद से होता है। इस रोग में पत्तियाँ नीचे की ओर झुक जाती हैं और पीली पड़कर सूख जाती हैं। अंत में पूरा पौधा मर जाता है।

फल गलन –

यह रोग फाइटोप्थेरा केपसिकी नामक फफूंद से होता है। इस रोग में फलों पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं एवं फल सड़ जाते हैं।

नियंत्रण

● 10 दिन के अंतर पर मेंकोजेब या मेटालेक्सिल (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

चूर्णिल आसिता –

यह रोग (एरीसाइफी साइकोरेसिएरम) नामक फफूंद से होता है। रोग के लक्षण पत्तियों की ऊपरी सतह एवं नए तनों पर सफेद चूर्णी धब्बे पाउडर के रुप में दिखाई देते हैं।

प्रबंधन

● घुलनशील गंधक 2.5 ग्राम या कैराथन 1 मि.ली./लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

विषाणु रोग–

यह एक विषाणु रोग है। यह तम्बाकू पर्ण कुंचन विषाणु से होता है। इस रोग में पत्तियाँ छोटी होकर मुड़ जाती हैं। पूरा पौधा बोना हो जाता है। यह रोग सफेद मक्खी के द्वारा एक पौधे से दूसरे पौधे में फैलता है।

जीवाणु पत्ती धब्बा

इस रोग में नई पत्तियों पर हल्के पीले हरे एवं पुरानी पत्तियों पर गहरे जल सोक्त धब्बे विकसित हो जाते हैं। अधिक धब्बे बनने पर पत्तियां पीली होकर गिर जाती हैं।

प्रबंधन ● यह एक बीज एवं मिट्टी जनित रोग है। इसके लिए बीजोपचार एवं फसल चक्र अपनाना अति आवश्यक है।

● पौध रोपण के पूर्व बोर्डो मिश्रण 1 प्रतिशत या कापर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर मृदा उपचार करें।

● ट्रायकोडर्मा 4 ग्राम एवं मेटालेक्सिल 6 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें।

● रोग के प्रकोप की अवस्था में स्ट्रेप्टोमाइसिन 2 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

CORTEVA agriscience

मक्के के भुट्टे लगाएँ

तेज गर्मी और धूप में मक्का की पैदावार बढ़ाने के सर्वोत्तम उपाय

भारत कृषि क्षेत्र मौसम परिवर्तन के कारण चुनौतियों का सामना कर रहा है। अत्यधिक मौसमी घटनाओं की आवृत्ति, बढ़ते तापमान और मौसम परिवर्तन के अन्य परिणामों से फसल उत्पादन और किसानों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। विशेष रूप से, भारत में गर्मियों के महीनों में तपती धूप मक्के की खेती पर हानिकारक प्रभाव डालती है।

उच्च तापमान और सूखे मौसम से मिट्टी की नमी कम होती है, जिससे बहुत ज्यादा हरी पत्ती के ऊतकों के नुकसान के साथ पोषक तत्वों की कमी हो सकती है; और यह पराग अंकुरण को भी सीमित करता है, जिससे बीज के सेटिंग में कमी होती है और उत्पादन और फसल की गुणवत्ता में भी कमी आती है। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) चेतावनी देता है कि अल नीनो के प्रभाव से सूखा जैसी स्थितियों की 70 प्रतिशत संभावना है, जिससे वर्षा आश्रित खेती में खासकर फसल उत्पादन पर गंभीर प्रभाव हो सकता है।

कृषि शोधकर्ता डॉ. वी.के. सचन, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश के उप निदेशक कहते हैं, कि पूरे देश में मकई के किसान इस गर्मी के संकटपूर्ण मौसम से जूझ रहे हैं, जिसके कारण बिना थमते हुए लू के तूफानों और उच्च तापमान के कारण वसंतीय मकई की बुआई का समय अप्रैल के अंत में बदल गया है। बुआई के इस बदलाव ने पौधे की वृद्धि पर नकारात्मक प्रभाव डाला है, इसलिए किसानों के लिए समय पर फसल की बोनी करने के द्वारा बढ़ी हुई उत्पादकता और लाभ को बढ़ाने के लिए सावधानीपूर्वक उपाय अवश्य अपनाने की आवश्यकता होती है।

गर्मियों से उत्पन्न चुनौतियों को पार करने के लिए किसानों के उत्पादकता

को अधिकतम करने के लिए ये उपाय अपनाए जा सकते हैं।

● चरम गर्मी के मौसम में, मकई फसलों को ताजा रखने के लिए अक्सर पानी देना आवश्यक है। खेतों को हर सुबह और हर शाम पानी दिया जाना चाहिए, खासतौर पर मई और जून के पहले दो हफ्तों में।

● मकई फसल नमी के तनाव और अतिरिक्त नमी दोनों के लिए संवेदनशील होती हैं, इसलिए मिट्टी की आवश्यकता के अनुसार सिंचाई को नियंत्रित करना महत्वपूर्ण है। खेत की नमी को अधिकतम बनाने के लिए, फसल के पौधों में 50 प्रतिशत टैसल दिखाई देने के तुरंत बाद दो से तीन दिन के भीतर सिंचाई की जानी चाहिए।

● पौधे उगने से पहले, नमी की हालत में सिंचाई करें और फिर अधिकतम 35 से 50 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ उपयोग करें साथ ही 20 से 25 किलोग्राम पोटेशियम का भी उपयोग करें, दो से तीन दिनों के बाद।

● किसानों को मौसम पर नज़र रखना चाहिए क्योंकि मई एक महत्वपूर्ण महीना है जब मकई के भुट्टों में दाना भरने भरने का समय होता है, जो मकई के उत्पादन की क्षमता को अधिकतम स्तर तक पहुंचा सकती है।

● अनाज की गुणवत्ता बनाए रखने और मानसून पूर्व बारिश से बचाने के लिए किसानों को मकई को सावधानी से सुखाने और इसे सुरक्षित स्थानों पर भंडार करने की भी सलाह दी जाती है।

29 अप्रैल विश्व पशु चिकित्सा दिवस पर विशेष

पशु चिकित्सा व्यवसाय में विविधता, समानता और समावेशिता को बढ़ावा देना

● डॉ. उमा कुमरे (परते)

सबसे ज्यादा विविधता पूर्ण कार्य है पशु चिकित्सा. भारत के हर घर में सबसे पहले दरवाजा खटखटाने वाला व्यक्ति होता है दूध वाला जो आपको सबसे पहले जगाता है. भारत का हर व्यक्ति कहीं ना कहीं पशु और पशु उत्पादों से उनके बाजार मूल्यों से दूध, दही, घी, अंडे से और उसके बाजार भाव से प्रभावित प्रभावित होता है. हमारा कोई भी समाज हो उसका त्यौहार बिना दूध, दही, घी, पनीर, खोवा के संभव नहीं इसलिए हम सभी पशु चिकित्सकों का दायित्व हमारी जिम्मेदारी समाज के हर वर्ग के लिए है. दूध और अंडे प्रोटीन का बेहतरीन विकल्प है जो कुपोषित बच्चों गर्भवती माताओं बहनों और बुजुर्गों के लिए आसानी से हर बाजार में उपलब्ध है जो कुपोषण माल न्यूट्रीशन से नवजात शिशुओं को बढ़ते बच्चे बालक बालिकाओं के लिए प्राथमिक आहार है.

दिन प्रतिदिन लाइवस्टाक सेक्टर का भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रतिशत बढ़ा है. ग्रामीण अर्थव्यवस्था विशेषकर भूमिहीन और कम रखने वाले पशुपालकों के लिए पशुपालन आज भी एक चुनिंदा व्यवसाय है. वर्ष 2014 से लेकर आज तक पशुपालन का कंपाउंड एनुअल ग्रोथ रेट सीएजीआर 7.93 प्रतिशत है जबकि यह कृषि क्षेत्र में 4.94 प्रतिशत का योगदान कर रहा है. मुर्गी पालन, बकरी पालन, शुगर पालन, डेयरी, उद्यमिता, चारा विकास, गोबर, गोमूत्र, पंचगव्य उत्पाद इत्यादि एक बड़ा और विविधता पूर्ण उद्यमिता का चित्र उपलब्ध कराता है जो समाज के हर तबके को उसके आयु और आय वर्ग के हिसाब से लघु उद्योग इकाई से लेकर बड़े औद्योगिक इकाई जिसमें 50 लाख तक का अनुदान की सुविधा उपलब्ध कराता है. जैसा कि हम राष्ट्रीय पशुधन मिशन में करते आ रहे हैं. आज पूरे देश में पशुपालन उद्यमिता तेजी से बढ़ता हुआ व्यवसाय है और लगभग 10 करोड़ पशुपालकों को किसान के रोजगार का साधन है इसलिए भारत सरकार और कृषि मंत्रालय ने भी वित्तीय वर्ष 2021 में 9800 करोड़ और अगले 5 वर्षों में कुल 54618 करोड़ का प्रावधान उद्यमिता हेतु किया है . पशुपालन हर वर्ग को कच्चे उत्पाद जैसे दूध, अंडा, मांस से लेकर प्रोसेस्ड फूड और डिब्बाबंद उत्पाद जैसे कि घी, पनीर, दूध पाउडर सुविधा प्रदान करता है हर आयु वर्ग के हिसाब से महिलाओं के लिए भी बकरी पालन मुर्गी पालन जैसी सुविधा और समानता का अवसर प्रदान करता है कम लागत से लेकर करोड़ों की इनकी सुविधा देता है और इतनी सुविधाएं पशुपालन में आने वाले वर्षों में राष्ट्रीय गोकुल मिशन और राष्ट्रीय पशुधन मिशन जैसे दूरगामी प्रोजेक्ट्स पशुपालन को निश्चित ही नवीन आयाम देने में सफल होंगे, हम सब क्रियान्वित करेंगे और हमें गर्व है कि हम सब इस सुखद परिवर्तन को देख सकेंगे.

विश्व पशु चिकित्सा दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं जैसा कि वर्ष 2023 का थीम है पशु चिकित्सा व्यवसाय में विविधता समानता और समावेशिता को बढ़ावा देना तो हमारा पशुपालन और पशु चिकित्सा विज्ञान अपने आप में विविधता समानता समावेशिता को लिए हुए हैं. हम चूहे बिल्ली से लेकर शेर हाथी तक का इलाज करते हैं. हमारे पशु चिकित्सालय में हर रोज तरह-तरह के पशु जिसमें बकरी , मिट्ठू , बंदर , हिरण भी होते हैं और उतने ही तरह के अलग-अलग सामाजिक वर्गों समुदायों और अलग-अलग आयु वर्ग के पशुपालकों के संपर्क में हमारे पशु चिकित्सक रहते हैं. समाज का हर तबका हर समुदाय स्त्री, पुरुष, बच्चे, बुजुर्ग सभी किसी न किसी रूप में अपने पशुओं के स्नेह के कारण हम पशु चिकित्सकों से जुड़े ही होते हैं.

भारत देश आज पूरे विश्व में सर्वाधिक दूध का उत्पादन कर रहा है. हमारे देश का दूध उत्पादन पिछले वर्षों में 5.29 प्रतिशत बढ़ा है और कुल उत्पादन के हिसाब से प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 444 ग्राम प्रतिदिन है जो कि दुनिया के औसत से लगभग 100 ग्राम अधिक है और इसी तरह अति अद्भुत और गौरवान्वित करने वाले नोबल प्रोफेशन में इतनी ही प्रगति करेंगे पिछले पिछले दशकों में पशु चिकित्सा और पशुपालन के क्षेत्र में लगातार आमूलचूल परिवर्तन हो गए हैं जिसमें भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित एनएडीसीपी नेशनल एनिमल डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम जिसमें पूरे देश में व्रत रूप से खुरपका मुंहपका के नि:शुल्क टीकाकरण किए गए या इनाफ इंफॉर्मेशन नेटवर्क फॉर एनिमल प्रोडक्टिविटी एंड हेल्थ जिसके अंतर्गत समस्त दुधारू पशुओं को पहचान या आधार नंबर की तरह पहचान प्रदान की गई देशव्यापी अभियान ने मैदानी स्तर पर और उनके महत्व को बढ़ाया है और रोजगार के लिए युवाओं को प्रेरित किया है अब नवीन वैज्ञानिक विधियों के द्वारा विधियों के द्वारा जमीनी स्तर पर sex sorted semen तकनीक के द्वारा मादा बछड़ों का जन्म शत प्रतिशत किया जाना संभव हो पाया है एंब्रियो ट्रांसफर टेक्नालॉजी जैसी नवीनतम तकनीकों पर कार्य किया जा रहा है पशु चिकित्सकों के प्रयासों कार्यों को समाज और सरकार में भी सराहा जा रहा है और पशु चिकित्सक समाज का अभिन्न वर्ग है जो अपनी पहचान अपने परिश्रम व्यवसायिक और सामाजिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए बना रहा है इसका बेहतरीन उदाहरण महेंद्र पाल जो कि एक बैटरी पब्लिक हेल्थ साइंटिस्ट है और राष्ट्रपति जी द्वारा पद्मश्री अवॉर्ड से अलंकृत किए गए हम सभी पशु चिकित्सकों को उन पर गर्व है हमारा पशुपालन और पशु चिकित्सा का क्षेत्र यूं ही नित नए गौरवपूर्ण आयामों को छूता रहे.

वर्मीवाश एक जैविक तरल खाद

● **सांवर मल यादव** ● **विनोद कुमार यादव**
एमएससी, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग
● **लेखराज यादव एमएससी**
कीट विज्ञान विभाग
सैम हिगनिबाटम कृषि प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

वर्मीवाश का उपयोग

● एक लीटर वर्मीवाश को 10 ली. पानी में मिलाकर फसलों की विभिन्न अवस्थाओं में 15 दिन के अंतराल पर पत्तियों पर शाम के समय छिड़काव करें।

● एक ली. वर्मीवाश को एक ली. गोमूत्र में मिलाकर उसमें 10 ली. पानी मिलाएं एवं रात भर के लिए रख कर ऐसे 50-60 ली. वर्मीवाश का छिड़काव एक हेक्टेयर क्षेत्र में फसलों में करने पर जैव कीटनाशी व तरल खाद का काम करती है।

● ग्रीष्मकालीन सब्जियों में शीघ्र पुष्पन एवं फलन के लिए पर्णीय छिड़काव किया जाता हैं, जिससे उत्पादन में वृद्धि होती है।

वर्मीवाश के लाभ

● वर्मीवाश के प्रयोग से पौधे की अच्छी वृद्धि होती है व पादप रोग होने की संभावना कम हो जाती है।

● इसके प्रयोग से जल की लागत में कमी तथा अच्छी खेती सम्भव है।

● इसके उपयोग से पौधो में पोषक तत्वों की कमी नहीं होती जिससे रसायनिक उवरकों का उपयोग न होने से पर्यावरण स्वस्थ रहता है।

● कम लागत पर भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ती है और मृदा के भौतिक, रसायनिक एवं जैविक गुणों को बढ़ाती है।

वर्मीवाश तैयार करने की विधि

घड़ा विधि

● एक मिट्टी के घड़े के तले में छोटा छेद कर उसमें पतला पाईप लगा दें।

● घड़े के अन्दर सबसे पहले बालूरेत की पतली परत बिछा दें। जिससे तरल पदार्थ का निकास हो सके।

● इसके पश्चात घड़े में 15-20 सेमी 25 दिन पुराने गोबर की परत बिछा दें।

● गोबर की परत के ऊपर 15 सेमी हल्के सूखे जैविक पदार्थ की परत बिछा दें व इसके ऊपर पुन: गोबर की परत बिछा दें।

● इस प्रकार घड़े के ऊपर तक भर जाने पर 10-15 दिन बाद लगभग 1000-1200 वयस्क केंचुए घड़े में छोड़ दें।

● बड़े घड़े के ऊपर एक 2-3 लीटर क्षमता का छोटा छेद युक्त बर्तन लटका दें जिससे बूंद-बूंद पानी केचुएं वाले घड़े में गिरता रहे। बड़े घड़े (केचुओं वाला) व पानी के बर्तन को किसी जाल या डोरी की सहायता से छायादार पेड़ की टहनी पर लटका दें।

● बड़े घड़े के नीचे एक बर्तन रख दें। जिसमें वर्मीवाश (तरल) रूप में एकत्रित होगा।

● केंचुए डालने के 15-20 दिन उपरांत केंचुए वाले घड़े से प्राप्त वर्मीवाश (तरल) एकत्र हो जाने पर संग्रह कर सकते हैं।

सावधानियाँ

● केंचुए के घड़े के ऊपर रखे पानी के बर्तन से बूंद-बूंद पानी टपक रहा है या नहीं नियमित अंतराल पर देखते रहें।

● घड़े से बूंद-बूंद वर्मीवाश तरल एकत्र हो रहा है या नहीं।

● वर्मीवाश पूर्ण विकसित वयस्क केंचुओं से तैयार किया जाता है इस कारण वर्मीवाश के बर्तन में न्यूनतम 1000 वयस्क केंचुए रखें।

वर्मीवाश एक प्रकार का तरल पदार्थ है जो केंचुओं के शरीर से रिसाव व धोवन का मिश्रित रूप है जो फसलों व सब्जियों पर छिड़कने के रूप में काम आता है। केंचुओं के वर्मीवाश से मुख्य पोषक तत्व व अन्य सहायक तत्व प्राकृतिक रूप से प्राप्त होते हैं जिसकी सहायता से भूमि भुरभुरी व फसल स्वस्थ होती है वर्मीवाश के उपयोग से न केवल उत्तम गुणवत्ता युक्त उपज प्राप्त कर सकते हैं बल्कि इसे प्राकृतिक जैव कीटनाशक के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है। वर्मीवाश शहद के रंग के जैसा एक तरल जैव खाद है, जिसका उत्पादन केंचुआ खाद उत्पादन के दौरान या अलग से भी किया जाता है। केंचुए का शरीर तरल पदार्थों से भरा होता है एवं इनके शरीर से लगातार इनका उत्सर्जन होता रहता है। इस तरल पदार्थों का संग्रहण ही वर्मीवाश है। इसमें बहुत सारे पोषक तत्व, हार्मोन्स जैसे साइटोकिनीन, आक्सीटोसिन, विटामिन्स, एमिनो एसिड, एन्जाइम्स, उपयोगी सूक्ष्मजीव जैसे बैक्टीरिया, कवक, एक्टीनोमाइसिटिस इत्यादि पाए जाते हैं। इसमें सभी पोषक तत्व घुलनशील रूप में उपस्थित होते हैं जो पौधों को आसानी से उपलब्ध होते हैं।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

समस्या -समाधान

समस्या– मैं सूरजमुखी लगाना चाहता हूं कृपया तकनीकी जानकारी एवं मार्गदर्शन दें।

– जगमोहन शाह

समाधान– *सूरजमुखी एक बहुत उपयोगी तिलहनी फसल है परंतु इसका विस्तार सीमित है। जिसके दो कारण हैं दानों को पक्षियों द्वारा हानि से बचाना कठिन एवं दूसरा फूल में संतोषजनक फलन ना होना जिसको ठीक भी किया जाना सरल है। एक गांव में या क्षेत्र में सामूहिक रूप से इसकी बुआई होकर आवाज करके पक्षियों को हटाना दूसरा फूल खिलने पर मधुमक्खी पालन करके परागीकरण की क्रिया को बढ़ाया जा सकता है या फिर हाथों में ग्लोब पहनकर फूलों पर हाथ फिरवाना, अन्य जानकारी के लिये आप निम्न तकनीकी अपनायें।*

- *इसकी बुआई 15 जून से 15 जुलाई के मध्य की जाये।*
- *अच्छे जल निथार वाली भूमि का चयन करें।*
- *उन्नत किस्में के.बी.एस.एच.1, ए.बी.एस.एच11, बी.एम.एच. 1, पारस इत्यादि लगायें बीज हर वर्ष बदल कर बोयें।*
- *एक हेक्टर क्षेत्र के लिये 1 किलो बीज संकर किस्मों का तथा अन्य जातियों का 10–12 किलो/हे.*
- *यूरिया 87 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 375 किलो तथा पोटाश 60 किलो/हे. की दर से डालें।*
- *समय से निंदाई/गुड़ाई की जाये।*

समस्या– मई माह में खेत में क्या–क्या कार्य करें ताकि खरीफ की फसल अच्छा उत्पादन दे सके।

– द्वारका प्रसाद शर्मा

समाधान – *वैशाख जेठ में रबी की फसल कटने के बाद खेत खाली पड़े रहते हैं आपने अच्छा प्रश्न किया है। सतत मशीनीकरण के कारण खेतों की समतलता बिगड़ जाती है खेत यदि समतल नहीं होंगे तो वर्षा जल का संचय ठीक से नहीं हो पायेगा। ढाल होने से वर्षा जल तो बहेगा ही साथ में कीमती पोषक तत्वों को भी समेट कर खेत के बाहर कर देगा। 4–5 वर्षों के बाद खेतों में हल्का समतलीकरण करना जरूरी होता है। समतलीकरण से मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि खेत के ऊपरी सतह की भूमि हटा दी जाये। उल्लेखनीय है कि खेत के ऊपरी सतह की भूमि उर्वराशक्ति से भरपूर रहती है। हल्का समतलीकरण करने से टीले कट जाते हैं। ढाल में उस कटी मिट्टी को भरकर समतलीकरण किया जा सकता ऐसा करने से फसल में सिंचाई जल का व्यापक फैलाव तथा पोषक तत्वों का पूरा–पूरा बढ़वार संभव हो सकेगा। सतत एक ही प्रकार के यंत्रों के उपयोग से अधोभूमि का तल कठोर होने लगता है। परिणाम स्वरूप वर्षा जल का निथार हवा प्रकाश का लाभ पूर्ण रूप से नहीं हो पाता है। भूमि के प्रकार गहराई को भी ध्यान में रखकर ही समतलीकरण किया जाने के अच्छे परिणाम मिलते हैं।*

समस्या– मैंने गन्ना लगाया है ग्रीष्मकाल में प्रमुख रखरखाव के बारे में बतलायें।

– रामसिया यादव

समाधान – *मई–जून माह में तापमान बढ़ता रहता है परिणाम स्वरूप वाष्पीकरण का औसत भी बढ़ जाता है। गन्ना फसल का जल मांग अन्य फसलों की तुलना में अधिक है जो गर्मी में बढ़ जाती है जिससे फसल को इस मौसम में जल की जरूरत अधिक पढ़ जाती है। गन्ने की यह मांग 10–12 दिनों के अंतर से सिंचाई से ही पूरी की जा सकती है। गन्ना अक्सर गहरी भूमि में लगाया जाता है इस वजह से भूमिगत नमी बनाये रखने के लिये गन्ने की कतार के बीच निंदाई–गुड़ाई करके वाष्पीकरण की क्रिया में बाधा उत्पन्न कराना जरूरी होता है। इस कार्य से भूमि में वायु संचार भी बढ़ जाता है। फलस्वरूप पौधों की बढ़वार भी अच्छी होती है। साथ में खरपतवार को हटाने के बाद नत्रजन की टाप ड्रेसिंग भी करना जरूरी क्रिया होगी। फसल में अगोलाबेधक की रोकथाम हेतु 30 किलो कार्बोफ्यूरान 3 जी प्रति हेक्टर भूमि में डालकर तुरंत सिंचाई करें यह सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है। फसल में मिट्टी चढ़ाना ताकि फसल झुक ना पाये। मजबूत पकड़ भूमि से बनी रहे।*

समस्या– वर्षाऋतु में ग्वारगम लगाना चाहता हूं बीज कहां से मिलेगा कीट/रोगों की रोकथाम के लिये कौनसी दवा का उपयोग करें।

– प्रकाशचंद्र माली

समाधान– *अपने ग्वारगम के बीज के बारे में जानकारी चाही है। आपके जिले उज्जैन में सब्जी बीज विक्रेता तथा नजदीक के जिले इंदौर में सब्जियों के बीज की निजी कम्पनियां हैं आपको इसके अलावा अपने जिले के उपसंचालक उद्यानिकी से भी आप ग्वारगम के बीज के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आपने विशेषकर कीट रोग के नियंत्रण के लिये उपाय चाहे है जो निम्न बिंदुओं में सीमित है।*

- *कीट में प्रमुख रूप से कतरा, मोयला, कवरे के नियंत्रण के लिये प्रकाश प्रपंच लगाना सबसे अच्छा उपाय है। अन्य कीटों के नियंत्रण हेतु डायमिथिएट 30 ई.सी. की 1000 से 1250 मि.ली. मात्रा प्रति हेक्टर के हिसाब से 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।*
- *रोगों में झुलसा तथा भभूतिया सामान्य रूप से आते हैं उपचार हेतु झुलसा के लिये 2–3 किलो ताम्रयुक्त फफूंदनाशी 2–3 ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें। भभूतिया के नियंत्रण के लिये 25 किलो गंधक/हे.की दर से भुरकाव करें।*

समस्या– मैंने बैंगन लगाने की तैयारी की है क्या अन्य उर्वरकों के अलावा जिंक, बोरोन इत्यादि का भी उपयोग जरूरी होगा।

– प्रकाश कुशवाह

समाधान– *बैंगन हो या कोई अन्य फसल वर्तमान की स्थिति में भूमि में सूक्ष्म तत्वों की कमी आने लगी है। हमारा सुझाव है कि आप निम्न करें।*

- *वर्तमान में खेत खाली है आप अपनी मिट्टी का परीक्षण कराकर ही सूक्ष्म तत्वों का उपयोग करें।*
- *बैंगन की फसल हर वर्ष एक ही खेत में कदापि नहीं लगाये।*
- *जिंक की कमी आमतौर पर आती है इसलिये 25 किलो जिंक सल्फेट प्रति हेक्टर की दर से खेत की आखिरी तैयारी के समय अवश्य डालें। जिसे हर तीसरे वर्ष पुनः डालें।*
- *बोरोन की कमी मिट्टी परीक्षण के आधार पर ही पूर्ति करें।*
- *बैंगन के साथ मिर्च नहीं लगायें।*
- *बीज विश्वसनीय जगह से ही प्राप्त करें।।*

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.) फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत

पांच पुस्तकें एक साथ खरीदने पर डाक खर्च मुफ्त

★ बागवानी सीरीज ★

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक रु. 90/- कोड : 016

सब्जियों में पौध संरक्षण रु. 70/- कोड : 017

मशरूम एक लाभ अनेक रु. 40/- कोड : 019

मिर्च की उन्नत खेती रु. 50/- कोड : 020

केला उत्पादन रु. 70/- कोड : 025

गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण रु. 70/- कोड : 027

पपीता रु. 50/- कोड : 031

अदरक रु. 50/- कोड : 032

फलों की खेती रु. 70/- कोड : 040

सजाएं फूलों से बगिया रु. 60/- कोड : 041

घर की बगिया रु. 90/- कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम _____

ग्राम _____ पोस्ट _____ तह. _____

जिला _____ फोन/मोबा. _____

कुल राशि _____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या _____

संलग्न ड्राफ्ट नं. _____ मनी आर्डर रसीद क्र. _____ वी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011
फोन: 0755-4248100, 2554864, मो. : 9826255861

इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर, मो. : 09826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

स्वास्थ्य/ शिक्षण

प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है नींबू

- नींबू बहुऔषधीय फल है। जिनके सेवन से विभिन्न प्रकार की बीमारियों के प्रति शरीर में प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है। इसका उपयोग सलाद, शर्बत, अचार इत्यादि के रुप में करते है जिससे पाचनशीलता में वृद्धि होती है।
- नींबू खराब गले, कब्ज, किडनी स्टोन और मसूड़ों की समस्याओं में राहत पहुंचाता है।
- यह ब्लड प्रेशर एवं तनाव को कम करता है, त्वचा को स्वस्थ बनाने के साथ ही यह लीवर के लिए भी बेहतर होता है, पाचन क्रिया एवं शारीरिक वजन को संतुलित करने और कई तरह के कैंसर से बचाव करने में नींबू पानी मददगार होता है।
- नींबू का स्वास्थ्य पर पड़ने वाला सबसे महत्वपूर्ण फायदा यह है कि किडनी स्टोन शरीर से बिना किसी परेशानी के निकल जाता है। नींबू पानी पीने से शरीर को जलयोजन (जल जोड़ना) होने में मदद मिलती है, इसे हाई शुगर वाले जूस व हाई ड्रिंक का बेहतर इलाज माना जाता है। डायबिटीज वाले व्यक्ति को लगातार नींबू पानी सेवन करने की सलाह दी जाती है।

- पाचन संबंधित समस्याओं जैसे– पेट रोग, कब्ज, पेट जलन, पेट में गैस की समस्या को दूर करने में भी इसे प्रभावशाली पाया गया है। प्रतिदिन सुबह गर्म पानी में नींबू पीना लाभकारी होता है, जिससे गले की खराबी में आराम पहुँचता है।
- नींबू से भाप आसवन विधि से तेल निकाला जाता है जिसका उपयोग सुगंधित तेल, सैंट, परम्यूम, सुगंधित साबुन, पेय पदार्थों में फ्लेवर के रुप में एवं घरों को सुगंधमय करने में उपयोग किया जाता है।
- नींबू शराबी व्यक्ति के लिए भी उपयोग किया जाता है साथ ही साथ चर्मरोग एवं नेत्र की कमजोरी को दूर करने में सहायक होता हैं। त्वचा कैंसर को दूर करने में इसका शोध विदेशों में भी जारी है।
- पाचनशील रेशे का प्रमुख स्त्रोत नींबू है जिसके कारण यह मनुष्य को गस्ट्रोइन्टेस्टीनल बीमारी से बचाता है।
- इसमें पादप रसायन जैसे– कैरोटिनाइड, फ्लेवोनाइड, लिमोनाइड एवं एंटीऑक्सीडेंट गुण उपस्थित होने के कारण यह मानव स्वास्थ्य सुधार में मुख्य भूमिका निभाता है।
- फलों का जूस निकालते समय नींबू के छिलके को मिलाने से उसकी सुगंध बढ़ जाती है। इसके छिलके से बना तेल अधिक लाभदायक होने के कारण इसकी भारी मात्रा में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में मांग है जिसमें प्रतिजीवाणु का गुण पाया जाता है।
- इसके छिलके से बना तेल शीतल पेय पदार्थ में सुगंध हेतु उपयोग में लाया जाता है।
- जैम को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने के लिए नींबू के रस को मिलाया जाता है।
- इससे बना पेय पदार्थ मनुष्य के शरीर की कमजोरी तथा थकान को दूर करने में सहायक होता है।

विटामिनों से भरपूर दही खायें, रोग भगायें

दही में दूध के सभी गुण मौजूद रहते हैं। दूध में पाए जाने वाले जीवाणु गर्मी की ताप से बढ़ने लगते हैं। वे दूध में मौजूद शर्करा को लेक्टोज अम्ल में बदल देते हैं। जिससे दूध का मीठा स्वाद बदलकर कुछ खटास में परिवर्तित हो जाता है। यही होता है दही इसमें दूध के गुण जैसे चिकनाहट, विटामिन–ए, और सी प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस आदि ज्यों के त्यों विद्यमान रहते हैं। शक्तिवर्धक होने के बावजूद दही मोटापा नहीं बढ़ाता। यह इसकी खासियत है। वैज्ञानिकों के अनुसार दही में पानी के अलावा फैट्स, लेक्टोज तथा कैल्शियम, आयरन तथा विटामिन ए.बी.सी. के भी अंश पाए जाते हैं। गर्मियों में दही की लस्सी अथवा छाछ शीतल पेय की तरह पीया जाता है। छाछ में वसा कम होती है और गुण अधिक होते हैं। आयुर्वेद में छाछ का उपयोग मंदाग्नि पेचिश, आंतों की कमजोरी तथा लू लगने पर किया जाता है। भोजन के पश्चात छाछ पीने से भोजन आसानी से पच जाता है और शरीर को ठंडक प्रदान करता है। दही अत्यंत पाचक है। यह शरीर की फालतू चर्बी को कम करने में मददगार होता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि दही का प्रयोग कैंसर जैसी घातक बीमारी में भी लाभदायक होता है। दही दिल के लिए भी फायदेमंद है।

दही में एक ऐसा तत्व मौजूद होता है जो रक्त में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को घटाकर दिल के दौरे के खतरे को कम करता है।

इनके अलावा शारीरिक सौन्दर्य के लिये दही एक अच्छे क्लीनर का काम करता है। त्वचा की कांति बनाए रखने में भी दही मददगार है। बालों को धोने के लिये प्राचीनकाल से दही का उपयोग किया जाता रहा है। चिकनी, काली मिट्टी के साथ अथवा कोरे दही से बाल धोने से बाल लंबे, घने, मुलायम व चमकीले होते हैं। इसके लिए बालों की जड़ों में दही लगाकर कुछ देर के लिये छोड़ दें। इससे मस्तिष्क में शीतलता पहुंचती है।

दही की ठंडी मलाई चेहरे पर ताजगी का एहसास कराती है। यदि पेट की गड़बड़ी या कब्जियत हो जाए तो एक गिलास छाछ में चुटकीभर अजवायन पावडर डालकर पीने से खट्टी डकार आना बंद हो जाती है।

पाक्षिक पंचांग

1 से 14 मई 2023
विक्रम संवत् 2080
वैशाख शुक्ल 11 से ज्येष्ठ कृष्ण 9/10 तक

दि. माह	वार		तिथि/त्यौहार
1 मई	सोम	वैशाख शुक्ल	11 मोहिनी एकादशी व्रत
2 मई	मंगल	----------	12
3 मई	बुध	----------	13 प्रदोष व्रत
4 मई	गुरु	----------	14
5 मई	शुक्र	----------	15 स्ना.दा. व्रत पूर्णिमा
6 मई	शनि	ज्येष्ठ कृष्ण	1
7 मई	रवि	----------	2
8 मई	सोम	----------	3 गणेश चतुर्थी व्रत
9 मई	मंगल	----------	4
10 मई	बुध	----------	5
11 मई	गुरु	----------	6
12 मई	शुक्र	----------	7 पंचक 1.43 रात से
13 मई	शनि	----------	8 पंचक
14 मई	रवि	----------	9/10 पंचक

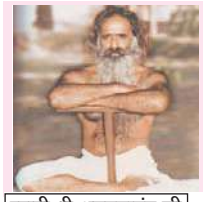

(गतांक से आगे)
श्रीमद्भगवद्गीता

।। यथार्थ गीता ।।

(ॐ श्री परमात्मने नमः)

स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी महाराज

।। अथाष्टादशोऽध्यायः ।।

इस प्रकार गीता में अर्जुन ने योगेश्वर श्रीकृष्ण के समक्ष प्रश्न–परिप्रश्नों की श्रृंखला खड़ी कर दी। जैसे– अध्याय 2/7– वह साधन मेरे प्रति कहिये जिससे मैं परमश्रेय को प्राप्त हो जाऊँ? 2/54– स्थितप्रज्ञ महापुरुष के लक्षण क्या हैं? 3/1– जब आपकी दृष्टि में ज्ञानयोग श्रेष्ठ है तो मुझे भयंकर कर्मों में क्यों लगाते हैं? 3/36– मनुष्य न चाहता हुआ भी किसकी प्रेरणा से पाप का आचरण करता है? 4/4– आपका जन्म तो अब हुआ है और सूर्य का जन्म बहुत पुराना है, तो मैं यह कैसे मान लूँ कि कल्प के आदि में इस योग को आपने सूर्य के प्रति कहा था? 5/1– कभी आप संन्यास की प्रशंसा करते हैं तो कभी निष्काम कर्म की। इनमें से एक निश्चय करके कहिये जिससे मैं परमश्रेय को प्राप्त कर लूँ? 6/35– मन चंचल है, फिर शिथिल प्रयत्नवाला श्रद्धावान् पुरुष आपको न प्राप्त होकर किस दुर्गति को प्राप्त होता है? 8/1–2– गोविन्द! जिसका आपने वर्णन किया, वह ब्रह्म क्या है? वह अध्यात्म क्या है? अधिदैव, अधिभूत क्या है? इस शरीर में अधियज्ञ कौन है? वह कर्म कया है? अन्त समय में आप किस प्रकार जानने में आते हैं? सात प्रश्न किये। अध्याय 10/ 17 में अर्जुन ने जिज्ञासा की कि– निरन्तर चिन्तन करता हुआ मैं किन–किन भावों द्वारा आपका स्मरण करूँ? 11/4 में उसने निवेदन किया कि– जिन विभूतियों का आपने वर्णन किया उन्हें मैं प्रत्यक्ष देखना चाहता हूँ। 12/1– जो अनन्य श्रद्धा से लगे हुए भक्तजन भली प्रकार आपकी उपासना करते हैं और दूसरे जो अक्षर अव्यक्त की उपासना करते हैं, इन दोनों में उत्तम योगवेत्ता कौन है? 14/21– तीनों गुणों से अतीत हुआ पुरुष किन लक्षणों से युक्त होता है तथा मनुष्य किस उपाय से इन तीनों गुणों से अतीत होता है? 17/1– जो मनुष्य उपरोक्त शास्त्रविधि को त्यागकर किन्तु श्रद्धा से युक्त होकर यजन करते हैं उनकी कौन–सी गति होती है? और 18/1 हे महाबाहो! मैं त्याग और संन्यास के यथार्थ स्वरूप को पृथक–पृथक जानना चाहता हूँ।

इस प्रकार अर्जुन प्रश्न करता गया। जो वह नहीं कर सकता था उन गोपनीय रहस्यों को भगवान ने स्वयं दर्शाया। इनका समाधान होते ही वह प्रश्नों से विरत हो गया और बोला– गोविन्द 7 अब मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा। वस्तुतः ये प्रश्न मानवमात्र के लिये हैं। इन सभी प्रश्नों के समाधान के बिना कोई भी साधक श्रेय–पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। अतः सद्गुरु के आदेश का पालन करने के लिये, श्रेय–पथ पर अग्रसर होने के लिये सम्पूर्ण गीता का श्रवण अति आवश्यक है। अर्जुन का समाधान हो गया। साथ ही योगेश्वर श्रीकृष्ण के श्रीमुख से निःसृत वाणी का उपसंहार हुआ। इस पर संजय बोला–

(ग्यारहवें अध्याय में विराट् रूप का दर्शन करा लेने पर योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कहा– अर्जुन! अनन्य भक्ति के द्वारा मैं इस प्रकार देखने को (जैसा तूने देखा है), तत्त्व से जानने तथा प्रवेश करने को सुलभ हूँ (11/54)। इस प्रकार दर्शन करनेवाले साक्षात् मेरे स्वरूप को प्राप्त हो जाते हैं और यहाँ अभी अर्जुन से पूछते हैं– क्या तुम्हारा मोह नष्ट हुआ? अर्जुन ने कहा– मेरा मोह नष्ट हो गया। मैं अपनी स्मृति को प्राप्त हो गया हूँ। आप जो कहते हैं, वही करूँगा। दर्शन के साथ तो अर्जुन को मुक्त हो जाना चाहिये था। वस्तुतः अर्जुन को तो जो होना था, हो गया; किन्तु शास्त्र भविष्य में आनेवाली पीढ़ी के लिये होता है। उसका उपयोग आप सबके लिये ही है।)

संजय उवाच्च

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम्।।74।।

इस प्रकार मैंने वासुदेव और महात्मा अर्जुन (अर्जुन एक महात्मा हे, योगी है, साधक है, न कि कोई धनुर्धर जो मारने के लिये खड़ा हो। अतः महात्मा अर्जुन) के इस विलक्षण और रोमांचकारी सम्वाद को सुना। आप में सुनने की क्षमता कैसे आयी? इस पर कहते हैं– **क्रमशः**

(प्रस्तुतिः सुभाष पटेल), मो.: 9009726352
email : subhashpatel072@gmail.com

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

किसान उत्पादक संगठनों की दो दिवसीय कार्यशाला

रायपुर। भारत सरकार की महत्वाकांक्षी 10,000 नये एफपीओ निर्माण परियोजना 2022-27 अंतर्गत एफ.पी.ओ. प्रबंधकों एवं लेखाकारों का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के 19 ब्लाक के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन कृषि वि.वि. के कुलपति डॉ. गिरीश चन्देल द्वारा किया गया। कुलपति ने अपने उद्बोधन में उत्पादों की गुणवत्ता, मात्रा, ग्रेंडिग, पैकेजिंग एवं मानकीकरण के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी गई।

उन्होंने एफपीओ को मिलेट मिशन 2023 में भाग लेकर मिलेट के उत्पादों की गुणवत्ता एवं प्रसंस्करण के महत्व के बारे में जानकारी दी गई। डॉ. गजेन्द्र चन्द्राकर द्वारा एफपीओ के लोगों को मिलेट कैफे एवं साथी बाजार तथा सामुदायिक ग्रामीण प्रसंस्करण केन्द्र के बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन मध्यभारत कंसोर्टियम के सी.ई.ओ. श्री योगेश द्विवेदी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ. हुलास पाठक, विभाग अध्यक्ष कृषि अर्थशास्त्र डॉ. दास, डीन कृषि महाविद्यालय डॉ. अजय वर्मा संचालक कृषि प्रसार सेवायें ने भी संबोधित किया।

किसानों की आय बढ़ाने के लिए निष्ठापूर्वक करें कार्य : कलेक्टर

आगामी खरीफ के लिए कार्ययोजना बनाने के दिए निर्देश

राजनांदगांव। कलेक्टर श्री डोमन सिंह ने कलेक्टोरेट सभाकक्ष में सुराजी गांव योजना, गोधन न्याय योजना, रबी फसल एवं आगामी खरीफ के लिए कार्य योजना बनाने हेतु कृषि, उद्यानिकी, मत्स्य एवं पशुपालन विभागों द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की। कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि शासन द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाओं के माध्यम से हरसंभव कार्य किए जा रहे हैं। कृषि एवं उससे जुड़े सभी सेक्टर इस दिशा में प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य करें। उन्होंने कहा कि रबी की फसल का रकबा बढ़ाने के साथ ही धान के बदले अन्य वैकल्पिक फसल दलहन, तिलहन को बढ़ावा देने की जरूरत है। मिलेट मिशन के अंतर्गत लघु धान्य फसलों रागी, कोदो, कुटकी फसल लगाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करें। उन्होंने आगामी खरीफ के लिए कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए तथा बीज, उर्वरक, आदान सामग्री के संबंध में जानकारी ली। कलेक्टर ने कहा कि गोधन न्याय योजना के तहत शासन द्वारा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने उद्यानिकी विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा के दौरान सामुदायिक बाड़ी, पलवराईजर, मशरूम उत्पादन, सुपोषण वाटिका, स्माल नर्सरी के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि फल-फूल एवं सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को प्रेरित करें।

श्री सिंह ने कहा कि मत्स्य पालन के लिए मत्स्य बीज उत्पादन, मछुआ सहकारिता, मत्स्य पालन प्रसार अंतर्गत मत्स्य बीज संवर्धन, नाव, जाल के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि गौठानों में डबरी निर्माण कर मत्स्य पालन किया जा सकता है।

इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ श्री अमित कुमार, उप संचालक कृषि श्री नागेश्वर लाल पाण्डेय, उप संचालक पशु चिकित्सा सेवाएं, सहायक संचालक उद्यानिकी श्री राजेश शर्मा, सहायक संचालक कृषि श्री टीकम सिंह ठाकुर, सहायक संचालक मत्स्य श्रीमती गीतांजलि गजभिए, पशु चिकित्सा विभाग श्रीमती ममता मेश्राम सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

रंग सागर एडवरटाईजमेंट
आदिकाल से चले आ रहे
'नुक्कड़ नाटक' को अपनाएं,
साथ ही अपने विजिनेस को बढ़ाएं।
(डायरेक्टर) तेजराम साहू
मो. : 9301005265, 9424231073

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

76 वर्षों से कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का एकमात्र अखबार
76 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
रायपुर – भोपाल –जयपुर

- कृषक जगत एकमात्र कृषि साप्ताहिक, जो 25 लाख से अधिक पाठकों को कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र की नियमित नई जानकारी देता है.
- कृषक जगत के प्रत्येक अंक में कृषि, बागवानी, कृषि मशीनरी उपयोग, पंचायत, पशुपालन, अनुसंधान आदि का समावेश.
- कृषक जगत द्वारा विभिन्न विषयों पर विशेषांक की गौरवशाली परम्परा.

25 लाख पाठक

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' – प्रति सप्ताह ◘ भोपाल ◘ जयपुर ◘ रायपुर संस्करण
निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).
नाम .....
.....
ग्राम ..... पो. .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, PAYTM/UPI : Mobile 9826255861

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत
रायपुर : एलआईजी 5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर, मो. : 9826255862
भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. :9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. :9829254092, 7387422952
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर मो. :9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

किसानों को अब आधे दाम पर मिलेगी डीएपी : श्री शाह

केन्द्रीय सहकारिता मंत्री ने किया इफको नैनो डीएपी लांच

नई दिल्ली। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत कृषि क्षेत्र में नए अध्याय की शुरुआत हुई है। नैनो यूरिया के बाद खेती के लिए अब स्वदेशी नैनो डीएपी भी तरल के रूप में बोतल में उपलब्ध होगी। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने गत दिनों इसका लोकार्पण किया। इस अवसर पर सहकारिता मंत्रालय के सचिव श्री ज्ञानेश कुमार, इफको के चेयरमैन श्री दिलीप संघानी और प्रबंध निदेशक श्री यूएस अवस्थी भी उपस्थित थे।

नैनो डीएपी से कम होगी खेती की लागत

दानेदार डीएपी की तुलना में बोतल बंद डीएपी आधे से भी कम दाम पर मिलेगी। डीएपी की 50 किलो की परंपरागत बोरी की कीमत 1350 रुपये आती है, जबकि नैनो डीएपी की आधा लीटर की बोतल किसानों को छह सौ रुपये में उपलब्ध होगी। इसके प्रयोग से कृषि की लागत और आयात पर निर्भरता घटेगी।

विदेशी मुद्रा की बचत

नैनो डीएपी के प्रयोग से खेतों की सेहत सुधरेगी और पैदावार में भी वृद्धि होगी। साथ ही विदेशी मुद्रा की भी बचत होगी। दिल्ली के इफको भवन में कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री अमित शाह ने कहा कि नैनो डीएपी फर्टिलाइजर की फील्ड में भारत को आत्मनिर्भर बनाएगा। केंद्र सरकार ने दो मार्च को ही अधिसूचित कर दिया है। इसके प्रयोग से खेत केमिकल मुक्त होगा। आधा लीटर की बोतल में नाइट्रोजन आठ एवं फास्फोरस 16 प्रतिशत है। इफको को नैनो यूरिया और नैनो डीएपी के लिए 20 वर्ष तक का पेटेंट मिला है। इसका पहला संयंत्र गुजरात के कलोल में लगा है। इस वर्ष पांच करोड़ बोतल का उत्पादन किया जाएगा। 2025-26 तक 18 करोड़ बोतल उत्पादन के माध्यम से 90 लाख टन डीएपी का बोझ कम होगा। एक वर्ष में ही नैनो यूरिया के तीन संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं। इफको की उपलब्धि बताते हुए श्री अमित शाह ने कहा कि देश में कुल 384 लाख टन उर्वरकों का उत्पादन हुआ है, जिसमें 132 लाख टन सहकारी समितियों ने किया। इनमें अकेले इफको ने 90 लाख टन उर्वरकों का उत्पादन किया है। उन्होंने कहा कि एक वर्ष के भीतर नैनो यूरिया के तीन संयंत्रों को चालू कर दिया गया है। अभी छह करोड़ तीन लाख बोतल की आपूर्ति की जा रही है। इससे यूरिया का आयात कम हुआ है। इफको अपनी कलोल इकाई में प्रति दिन आधा लीटर की दो लाख बोतलों की उत्पादन क्षमता के साथ एक नैनो डीएपी संयंत्र स्थापित कर रहा है।

तरल डीएपी खेती को संरक्षित करेगी

श्री शाह ने कहा कि देश में पारंपरिक डीएपी का ही अत्यधिक इस्तेमाल किया जाता है। पंजाब, हरियाणा, बंगाल एवं उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में प्रति एकड़ छह से आठ बोरे दानेदार डीएपी का इस्तेमाल किया जाता है। तमिलनाडु में धान की फसल में दानेदार डीएपी की टाप ड्रेसिंग की जाती है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक और बिहार के किसान मक्का, गन्ना एवं सब्जियों की खेती में भी धड़ल्ले से दानेदार डीएपी का प्रयोग करते हैं। नैनो डीएपी एवं नैनो यूरिया के प्रयोग से खेतों में केंचुओं की संख्या बढ़ेगी, जिससे भूमि को संरक्षित किया जा सकेगा।

आधा लीटर की बोतल 50 किलो डीएपी के बराबर

सहकारिता मंत्री ने किसानों से नैनो डीएपी के इस्तेमाल का आग्रह करते हुए कहा कि आधा लीटर की नैनो डीएपी की बोतल 50 किलो की परंपरागत डीएपी की बोरी के बराबर काम करेगी। एक एकड़ खेत के लिए आधा लीटर की बोतल काफी है।

उन्होंने कहा कि नैनो यूरिया को किसानों ने स्वीकार कर लिया है, लेकिन अभी बोरी वाली यूरिया भी प्रयोग में है। इससे फसल और मिट्टी को नुकसान होता है। नैनो यूरिया के साथ दानेदार यूरिया की जरूरत नहीं है। इसका प्रयोग न करें।

वेल्लोर इंजीनियरिंग एंट्रेंस एग्जाम (VITEEE) के नतीजे घोषित, काउंसलिंग शुरू

नई दिल्ली। वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (VIT) द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा VITEEE, 17 अप्रैल से 23 अप्रैल 2023 तक भारत के 121 शहरों और विदेशों के चार शहरों (दुबई, कुवैत, मस्कट और कतर) में एक कंप्यूटर आधारित परीक्षा के रूप में आयोजित की गई थी।

VITEEE-2023 में सभी भारतीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के छात्रों ने भाग लिया है। परिणाम "https://ugresults.vit.ac. in/ viteee" पोर्टल में प्रकाशित किए गए हैं, जिसे वीआईटी वेबसाइट "www.vit.ac.in" के माध्यम से भी देखा जा सकता है।

परीक्षा में झारखंड के श्री कुशाग्र बशिष्ठ ने पहली रैंक प्राप्त की जिसके बाद महाराष्ट्र के श्री प्रक्षाल श्रीनिवास चौधरी (दूसरी रैंक) और श्री माहिन प्रमोद धोके (तीसरा रैंक) हैं; चौथी रैंक- केरल के श्री आशिक स्टेनी; 5वीं रैंक-बिहार के श्री अंकित कुमार; 6 वीं रैंक-आंध्र प्रदेश के श्री नंद्याला प्रिंस ब्रन्हम रेड्डी; 7 वीं रैंक-बिहार के श्री मोहम्मद उमर फैसल; 8वीं रैंक- महाराष्ट्र के श्री अंशुल संदीप नफड़े; नौवीं रैंक-हरियाणा के श्री ऋषि गुप्ता और 10वीं रैंक-उत्तर प्रदेश के श्री तन्मय बघेल ने प्राप्त की हैं।

वीआईटी, वेल्लोर और चेन्नई वीआईटी-एपी और वीआईटी-भोपाल के बीटेक कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए 1 लाख रैंक के आवेदक काउंसलिंग में भाग लेने के पात्र हैं।

1 लाख रैंक के आवेदक वीआईटी, वेल्लोर और चेन्नई वीआईटी-एपी और वीआईटी-भोपाल के बीटेक कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए काउंसलिंग में भाग लेने के पात्र हैं। काउंसलिंग 26 अप्रैल से 14 जून, 2023 तक निर्धारित है।

रैंक-वार काउंसलिंग के लिए शेड्यूल: 1-20,000 रैंक के लिए चरण-1, 26 से 30 अप्रैल, 2023 तक है; 20,001-45,000 रैंक के लिए चरण-2, 9 से 11 मई 2023 तक हैं; 45,001-70,000 रैंक के लिए चरण- 3, 20 से 22 मई, 2023 तक हैं और रैंक 70,001-1,00,000 के लिए चरण-4, 31 मई से 2 जून, 2023 तक के लिए हैं।

एक लाख से ऊपर रैंक वाले उम्मीदवार केवल वीआईटी-एपी और वीआईटी-भोपाल के बीटेक कार्यक्रमों में काउंसलिंग के लिए पात्र हैं। इन रैंकों के लिए चरण-5 की काउंसलिंग 12 से 14 जून, 2023 तक निर्धारित है। आवंटन सुनिश्चित करने के लिए वीआईटी उम्मीदवारों को ऑनलाइन काउंसलिंग के दौरान अधिक से अधिक विकल्प देने के लिए प्रोत्साहित करता है। कक्षाएं अगस्त 2023 के दूसरे सप्ताह से शुरू होने की संभावना है।

1 से 10 तक वीआईटीईईई रैंक वाले उम्मीदवारों को सभी चार वर्षों के लिए 100 प्रतिशत शिक्षण निशुल्क दिया जायोगा; 11वीं से 50वीं तक की रैंक पर 75 प्रतिशत ट्यूशन फीस की छूट मिलेगी; 51 से 100 रैंक वालों को 50 फीसदी ट्यूशन फीस की छूट मिलेगी और 101 से 500 रैंक वाले उम्मीदवारों को 25 प्रतिशत ट्यूशन फीस माफी मिलेगी।

तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश के सभी जिलों में जिला टॉपर्स (एक लड़का और एक लड़की) जिन्होंने सरकारी स्कूलों में पढ़ाई की या करते हैं, उन्हें स्टार्स (सपोर्ट द एडवांसमेंट ऑफ रूरल स्टूडेंट्स) योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में शत-प्रतिशत फीस माफी और हॉस्टल व मेस की फीस में छूट दी जाएगी।

अन्य 3-वर्षीय स्नातक कार्यक्रमों के लिए आवेदन, 4-वर्षीय बी.एससी (कृषि), बी.आर्क और 5 वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम भी खुले हैं और छात्र अधिक जानकारी के लिए वीआईटी की वेबसाइट "www.vit.ac.in" पर जा सकते हैं।

SRM IST के लिए अत्याधुनिक कंप्यूटर उत्कृष्टता केंद्र का उद्घाटन किया

कट्टनकुलथुर (तमिलनाडु)। भारत में अपनी तरह की विशेष पहल में, एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नालॉजी द्वारा इलेक्ट्रॉनिक्स कूलिंग और कम्प्यूटेशनल फ्लुइड डायनेमिक्स लैब के लिए उत्कृष्टता केंद्र समर्पित किया गया। डॉ. पी. सत्यनारायण, प्रो-चांसलर ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा स्थापित और इंटेल कॉर्पोरेशन, यूएसए द्वारा समर्थित नई सुविधा का उद्घाटन किया।

एकाधिक लाभ: छात्रों के लिए कौशल प्रशिक्षण, अनुसंधान और विकास, पेशेवर और खुले ऐच्छिक, इलेक्ट्रॉनिक्स कूलिंग में दो साल की पूर्णकालिक विशेषता और उच्च-वेतन प्लेसमेंट नई प्रयोगशालाओं के उद्देश्य हैं। नई सुविधा के बारे में, डॉ. सत्यनारायण ने कहा- SRM IST हमेशा से तकनीक से संचालित रहा हैं, और हम छात्रों के लिए अपने बुनियादी ढांचे को अपग्रेड करने में सबसे आगे रहे हैं, और नई लैब अभी तक एक और उदाहरण है।

आला क्षेत्र, उच्च वेतन: चूंकि इलेक्ट्रॉनिक्स कूलिंग एक उभरता हुआ, अत्याधुनिक और विशिष्ट क्षेत्र था, जो छात्र इस पाठ्यक्रम को एक वैकल्पिक के रूप में पूरा करते हैं और इसमें दक्षता रखते हैं, वे प्रतिवर्ष 1 से 1.5 करोड़ के सुपर पैकेज के साथ सुपर ड्रीम ऑफर की आकांक्षा कर सकते हैं।

गर्व की बात : डॉ. सत्यनारायण ने कहा कि नई लैब की स्थापना पर करीब रु 2.5 करोड़ रुपये खर्च किए गए। 'यह केवल मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग और एसआरएम आईएसटी के लिए ही नहीं, बल्कि तमिलनाडु के लिए भी गर्व की बात है।' डॉ. प्रभाकर सुब्रह्मण्यम तकनीकी लीड और सीनियर, इंटेल कॉर्पोरेशन में स्टाफ थर्मल आर्किटेक्ट प्रो.सी. मुथमीजचेलवन, वाइस चांसलर, डॉ. एस.पोनसुमी, रजिस्ट्रार, डॉ. किंग्सले जेबा सिंह, डीन, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, डॉ. बी.के. उद्घाटन समारोह में ज्ञानवेल, प्रोफेसर और अन्य वरिष्ठ संकाय मौजूद थे।

"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910
कृषक जगत
Post Bag No. 37,BHOPAL-462011

श्रीनेचर ग्रीन एग्रोटेक की बिजनेस पार्टनर मीटिंग

छ.ग. से लगभग 55 विक्रेता बंधुओं ने भाग लिया

रायपुर। किसानों के बीच लोकप्रियता एवं विश्वास हासिल कर चुकी कंपनी श्रीनेचर ग्रीन एग्रोटेक द्वारा बिजनेस पार्टनर मीटिंग होटल फॉर्चून एक्रोन रेजीना केन्डोलिम नार्थ गोवा में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कंपनी के तरफ से चेयरमैन श्री हरीश बोरा मैनेजिंग डायरेक्टर श्री नीरज पाण्डेय एवं छ. ग. से समस्त स्टॉफ उपस्थित थे। छ.ग. से लगभग 55 विक्रेता बंधुओं ने भाग लिया। उपस्थित विक्रेताओं को सम्बोधित करते हुए कंपनी के चेयरमैन श्री बोरा ने आने समय में स्पेशिफिक टेक्निकलों पर काम कर रही है। भारत सरकार से 150 टेक्निकल का सीआईबी लायसेंस ले लिया है। जो कि मार्केट में आने वाले समय में किसान भाइयों को उपलब्ध करायेंगे। कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री पाण्डेय ने बताया कि कंपनी गुणवत्ता के साथ कोई समझौता नहीं करती यही कारण कंपनी बहुत ही कम समय समय में किसानों के बीच लोकप्रिय बन चुकी है।

पिछले वित्तीय वर्ष 2022-23 के व्यापार के बारे में चर्चा की। एग्रोकेमिकल मार्केट के बारे विस्तृत जानकारी प्रदान की। साथ ही साथ कंपनी के एमडी ने बताया की कंपनी धान के बीज को किसानों के लिए मार्केट में लाई है । वर्ष 2022-23 बेस्ट एचीवर्स के लिए अवार्ड से सम्मानित किया गया। जिसमें प्रमुख रूप से अनुपम कृषि केन्द्र जिला जांजगीर चांपा को साइन स्टार पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके बाद आरती कृषि केन्द्र चेतावर जिला मुंगेली को बेस्ट बिजनेस ग्रोथ अवार्ड से पुरस्कृत किया गया। कम्पनी 13 अन्य अवॉर्ड से छ.ग. से आए हुए डीलरों को सम्मानित किया।

कम्पनी के द्वारा विक्रेता बंधुओं मनोरंजन को ध्यान में रखते हुए क्रूज बीच का भ्रमण कराया। सभी विक्रेता बंधुओं काफी उत्साहित दिखें। कार्यक्रम के अंत में छ.ग. से आए हुए सभी विक्रेता बंधुओं का कंपनी के एमडी श्री नीरज पाण्डेय ने आभार प्रकट किया एवं आने वाले वित्तीय वर्ष के लिए शुभकामनाएं दीं।

इफको की जिला सहकारिता संगोष्ठी

रायगढ़। जिला रायगढ़ में इफको नैनो उर्वरक उपयोग एवं महत्व आधारित 'जिला सहकारिता संगोष्ठी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में श्री सी. के. जायसवाल (डेप्युटी रजिस्ट्रार सहकारी संस्थाएं), श्री आर. एस. तिवारी (राज्य विपणन प्रबंधक ,इफको), डॉ. एस. के. सिंह (प्रबंधक कृषि सेवाएं इफको), श्री प्रवीण पैकरा (जिला विपणन अधिकारी), श्री अनिल वर्मा (उपसंचालक कृषि), श्री सुनील कुमार सोढ़ी (नोडल अधिकारी, अपेक्स बैंक) के सानिध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में जिला रायगढ़ से समस्त समिति प्रबंधकों एवं ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में इफको नैनो यूरिया तरल, नैनो डीएपी, सागरिका एवं जैव उर्वरकों पर विस्तार से जानकारी एवं चर्चा की गई।

साइटोलाइफ एग्रीटेक की बिजनेस मीट संपन्न

मुंबई। साइटोलाइफ की प्रथम बिजनेस एसोसिएट मीटिंग अक्षय तृतीया पर रायपुर के होटल सायाजी में सम्पन्न हुई। इस कार्यक्रम में छग के सभी प्रमुख कृषि आदान वितरक व अन्य कृषि जगत के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

साइटोलाइफ के सीईओ डॉ. अमित त्रिपाठी ने कंपनी की विस्तृत कार्ययोजना को प्रेजेंट किया और कंपनी के विभिन्न बिजनेस आयामों को भी बताया जिसमें एग्री- डाइग्नोस्टिक के साथ एग्री-इनपुटस की अनुशंसा तथा अन्य ग्लोबल कृषि तकनीकियां भी भारत में आ रही हैं जो किसानों के लिए बहुत लाभदायी होंगी।

श्री डी. के. चोपड़ा, प्रमुख मार्गदर्शक साइटोलाइफ (कृषि जगत की जाने माने व्यक्ति) ने अपने वक्तव्य में कंपनी के विज्न व मिशन को मानवता और पर्यावरण के बीच एक संतुलन के साथ कार्य करने वाली योजना बतायी।

डॉ. जी. पी. पांडे (से. अपर संचालक कृषि) ने कृषि वितरकों की महत्वपूर्ण भूमिका, जहां व्यापार और किसान हित एक साथ ही साधन होता है पर व्याख्यान दिया। श्री आर. एस. तिवारी (प्रांत प्रबंधक इफको) ने कृषि में समन्वित पोषण प्रबंधन पर अपने अनुभव व विचार व्यक्त किए। डॉ. शिवलिंगम, वरिष्ठ वैज्ञानिक ICAR – NIBSM भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

साइटोलाइफ के इस कार्यक्रम में कृषि मंत्री, कुलपति व संचालक ICAR – NIBSM तथा संचालक DKMA (पूर्व कृषि आयुक्त भारत सरकार) ने अपने बधाई संदेश पत्र प्रेषित किए।

सभी वितरक बंधुओं ने साइटोलाइफ की कार्यशैली व परिणामोन्मुख वैज्ञानिक उत्पादों को भी खूब सराहा।

Be it Water or Sewerage, Telecom or Gas, Infrastructure or Irrigation...

Jain Pipe offers you End-to-End Piping Solutions

Applications
- Urban & Rural Drinking Water Schemes
- House Service Connections
- Lift and Gravity Irrigation Systems
- Sewerage Pumping & Gravity Pipeline
- Sea/River Water Intake/Outfall & River Crossing
- Marine & Submarine Pipeline
- Drip & Sprinkler Irrigation systems
- Water Well Casing & Screen Pipes
- Single/ Double Wall Corrugated Pipes
- City Gas Distribution Pipeline
- Soil, Waste & Rainwater in Building Construction
- Hot & Cold Plumbing Systems
- Column/ Riser Pipes for Submersible Pump
- Sub-Soil Drainage Systems
- Slurry/ Chemical/ Acid Conveyance
- Dust Suppression Systems
- Permanently Lubricated Ducts / Micro Multi Ducts for Telecom OFC Backbone/ Data Networks

Available in sizes
- PVC upto 630 mm Ø
- PE upto 2500 mm Ø
- PE Corrugated upto 500 mm Ø
- Pressure Rating upto 25 Kgf/cm^2
- As per major National & International standards

Solutions for Generations

JAIN Jain Irrigation Systems Ltd. Small Ideas. Big Revolutions. | Jain Pipes | Jain PE Pipes | Jain Column Pipe | Jain Plumbing | B-SURE | B-SURE | B-SURE

Jain Plastic Park, N.H.06, P. O. Box: 72, Jalgaon-425001. India.,
+91 257 225 8011; Fax: +91 257 225 8111. **Toll Free: 1800 599 2000; 1800 599 5000;**
jisl@jains.com www.jains.com

Madhya Pradesh: Vivek Dangrikar 9406802800; Anand Jain 9406802828; Shakeel Khan 9406802805; Kamlesh Bhongade 9406802806; Kaushal Shankwar 9406802802; Saurabh Saxena 9406802848; Abdul Ahad 9406802812; Pankaj Jaiswal 9406802829; Rajkumar Yadav 9406802869; Vikas Nema 9406802819; Javed Khan 9406802820; Amit Pandit 9406802803 Satish Agarwal 9406802804
Rajasthan: Bharat Soni 9530390821; **Chhattisgarh:** Girish Makwana 9422776835

JAIN Mobile App | Connect with us | JAIN Website link